आदर्श-भ्राता

(खण्ड काव्य)



रचयिता

आचार्य श्री नानेश



प्रकाशक

श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

● आदर्श भ्राता

● आचार्य श्रीनानेश

● अर्थ सहयोगी श्री मन्नालाल केशरीमल मेहता शाही बाग
प्रथम संस्करण : रोड़, राजस्थान सोसाइटी अहमदाबाद–४

● प्रकाशक
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन,
बीकानेर—३३४००१

● प्रथम संस्करण : १९८३
● द्वितीय संस्करण : १९८७

● मूल्य : ४.००

मुद्रक : जैन आर्ट प्रेस, समता भवन बीकानेर

प्रकाशकीय

समता विभूति, जिनशासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक, ारित्रचूड़ामणि परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म. सा. ारतीय सन्त-परम्परा मे निर्ग्रंथ-परम्परा के विशिष्ट आचार्य संत । आपका सम्पूर्ण जीवन आत्म-कल्याण के साथ-साथ लोक-ल्याण के लिये समर्पित है । आपने जहां नानाविध विषमताओं ोर तनावो से ग्रस्त मानव-जाति के परित्राण के लिये समता-र्शन और समीक्षण-ध्यान जैसा अमृततत्त्व प्रस्तुत किया, वहा लित-जनो के उद्धार के लिये धर्मपाल-प्रवृत्ति का शुभारम्भ कर ार्व्यसनी जीवन निर्माणकारी ऐतिहासिक कार्य प्रवर्तन की प्रेरणा । आपके उपदेशो से प्रभावित होकर हजारों लोग जीवन में ग्रसन मुक्त और स्वावलम्बी बने है ।

आचार्य श्री नानालाल जी म. सा का व्यक्तित्व बहुमुखी तिभा का धनी है । जहां एक ओर आप मूक आत्म साधक प्रखर ग्मी प्रभावशील उपदेष्टा है, वहा दूसरी ओर प्रबुद्ध विचारक ोर संवेदनशील कवि–हृदय भी है । अपने व्याख्यानों मे जहां ाप प्राचीन शास्त्र एव आधुनिक ज्ञान विज्ञान के संदर्भ उद्धृत रते चलते है वहां अपने स्वरचित काव्याशों से भी उसे सरस नाने मे पीछे नहीं रहते । पर आपका यह कवि स्वरूप अब तक ाहित्य ससार के समक्ष अप्रकट ही रहा । इस कृति के माध्यम पहली वार वह साहित्य-संसार के समक्ष प्रकट हो रहा है ।

प्रस्तुत कृति **'आदर्श भ्राता'** प्राचीन कथानक के आधार पर रचित सरस खण्ड काव्य है। इसमें मानसिंह और अभयसिंह के आदर्श भ्रातृ-प्रेम की सुन्दर व्यञ्जना की गई है। राजा प्रतापसिंह अपने पुत्र मानसिंह के छोटे से अपराध (एक बाला की गगरी पर निशाना मारना) पर उसे निर्वासन का दण्ड देता है। भाई अभयसिंह भी मानसिंह का साथ देता है और दोनो जंगल की ओर चल पड़ते हैं। जंगल में कई प्रकार के संकट आते हैं पर नवकार मंत्र के प्रभाव से धैर्य और साहस बटोर कर अभयसिंह उन सभी संकटों से पार उतरता है। अभयसिंह की सूझ-बूझ और साहसशीलता के फलस्वरूप जहां मानसिंह विजयनगर का राजा बनता है, वहां अभयसिंह अपनी वीरता और धार्मिक साधना के बल पर मदन मञ्जरी, रत्नवती के साथ विवाह कर अन्ततः अपने बिछुड़े हुए भाई मानसिंह से मिलता है और अन्त में दोनो भाई आत्मकल्याण की भावना से भागवती दीक्षा अंगीकृत करते हैं।

यह छोटा-सा कथानक विभिन्न कथानक रूढियो के आधार पर विकसित होता चलता है। इसमें अच्छे-बुरे पात्रों के माध्यम से सत्-असत् का संघर्ष दिखा कर अन्त मे सत्य की विजय प्रतिपादित की गई है। इस काव्य मे मूल रूप से दो भाइयों के निःस्वार्थ प्रेम-भाव को व्यंजित किया गया है। पर यथा-प्रसंग कई जीवन -मूल्यों पर भी प्रकाश डाला गया है। वे मूल्य हैं— सत्ता पर सेवा की, क्रोध पर क्षमा की, अधर्म पर धर्म की, कुशील पर शील की, असंयम पर संयम की और हिंसा पर अहिंसा की विजय।

आचार्य श्री ने अपने राणावास चातुर्मास में व्याख्यान के समय इस काव्य को गा-गाकर जनमानस के समक्ष आदर्श-भ्राता का उदाहरण प्रस्तुत किया। आचार्य श्री ने प्रकाशन के उद्देश्य

से इसकी रचना नहीं की । कथा के माध्यम से साधारण जन-मानस भी गूढ़ रहस्य को सुगमता पूर्वक हृदयंगम कर लेता है । इसी भावना से सहज, सरल भाषा और लोक प्रचलित छंद में इस प्राचीन कथा को संगीतबद्ध किया । श्री राममुनिजी ने इसे संकलित करने की महती कृपा की । आचार्य श्री का यह प्रथम काव्य काव्यरसिकों और धर्म प्रेमी पाठको के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है ।

मै. मन्नालालअमरचन्द एण्ड सन्स अहमदाबादवालों ने प्रथम संस्करण के प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोग दिया था अतः उनके आभारी है । आप राजस्थान के चित्तौड़गढ डिस्ट्रिक्ट के बीनोला गाव के है । आप चार भाई है—सर्वश्री हीरालालजी, कजोडीमल जी, छगनलालजी तथा मन्नालालजी । इन चारो भाइयों मे हीरालालजी तथा छगनलालजी का स्वर्गवास हो चुका है । ४५ वर्षो से आपका व्यवसाय अहमदाबाद मे लौह तथा विनलौह धातु का तथा दो वर्ष से केमिकल का भी व्यवसाय है ! आपकी इस समय तीन फर्मे है। (१) मन्नालाल अमरचन्द एण्ड सन्स (२) अरिहन्त मेटल कॉरपोरेशन (३) अमीकेम कॉरपोरेशन । व्यावसायिक प्रतिभा के धनी होने के साथ-साथ आपकी धार्मिक रुचि भी प्रशंसनीय है। साहित्य के प्रति आपकी अधिक रुचि है । आचार्य श्री के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा है । मैं संघ की ओर से भी आपके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूं । इसका द्वितीय सस्करण पाठको के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता महसूस हो रही है ।

गुमानमल चोरड़िया
सयोजक
साहित्य प्रकाशन समिति

चुन्नीलाल मेहता — अध्यक्ष
श्री अ. भा साधुमार्गी जैन सघ
धनराज बेताला — मत्री

हृदयोद्गार

परम श्रद्धेय समता दर्शन प्रणेता, जिन शासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य प्रवर श्री श्री १००८ श्री नानालालजी म० सा० के सीमातीत, अनन्त की संज्ञा में अन्तर्निहित, अप्रतिम और विराट् व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में आवद्ध कर सकना दुष्कर ही नहीं अपितु असंभव है तथापि इन चारित्र-चूड़ामणि महापुरुष के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की सामान्य झलक प्रस्तुत करने को भी मन मयूर मचल उठा है। परम पूज्य आचार्य श्री जी म० सा० का पावन चरित्र प्रस्तुत संदर्भ में उल्लिखित करना नितान्त आवश्यक भी है। विश्वास है इस लघु कार्य को आप सहृदयता पूर्वक ग्रहण करेंगे।

व्यक्ति समाज और रष्ट्र उत्कर्ष :

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर का जीवन प्रारम्भ से ही अनुसन्धानक रहा है रहा है। अनुसन्धान करने में आपका चिंतन सतत प्रवाहमान रहता है। आपने आगमों को अनेक गमों से हृदयंगम किया है। आपकी ध्यान एवं योग साधना वेजोड़ है। अन्तर्यात्रा के समय आपने समीक्षण ध्यान का अनुसन्धान किया और चिन्तन के क्षणों में समता-दर्शन की सर्जना की। समीक्षण ध्यान मानसिक चिन्ता और तनाव के निवारण का अमोघ उपाय और समता-दर्शन मानव जीवन को विपाक्त बनाने वाली विषमता को हटाकर मानवमात्र को समभाव में स्थित करने का अनुपम दिशा बोध है। इन दोनों अचूक उपायों के अवलम्बन से व्यक्ति,

समाज और राष्ट्र सहज ही शांत-स्वस्थ, संतुलित और समतामय बनता है।

संयम पथ के पथिक :

जन-जन के जीवनधार, आचार्य श्री जी की सरल, निर्मल, ओजमयी मधुवाणी गहन-गम्भीर-शास्त्रीय विषयों को भी श्रोताओं को हृदयंगम कराने में अप्रतिम है। आपके तपोमय जीवन और शाश्वत जीवन-मूल्यों के प्रति अविचल श्रद्धान् से प्रेरित होकर आपके चरण पथ का अनुगमन करने के लिये आज देश भर मे युवक-युवतियों में होड़ मची हुई है। यही कारण है कि वैराग्य के कठिन मार्ग पर अल्पावधि मे आपकी निश्रा मे १८६ मुमुक्षु आत्माओ ने भागवती दीक्षा ग्रहण कर साधना के कंटकाकीर्ण मार्ग पर स्वय को समर्पित करते हुए आगे बढाया है।

दलितोद्धार :

समाज में व्याप्त विषमताओं से जिन समाज-बन्धुओ का जीवन दूभर हो गया है और जो दलित और पतित के रूप में अनादृत्त है। अपने उन पिछडे हुए बंधुओं की युग–युग की अतृप्त प्यास को समता के अमृत से सदैव के लिये तृप्त करने के लिये वर्णनातीत परिषह सहकर भी आचार्य श्री जी म० सा० उनके बीच पधारे। उनकी करुण पुकार पर आपका नवनीत-सा मृदु हृदय पिघल उठा। भारत के हृदयस्थल मालव के इन निवासियों को धर्म का उद्बोध दिया। वे सभी धर्मपाल बने और आज उस सम्पूर्ण क्षेत्र मे विषमता से समता, विकृति से प्रकृति, दुर्व्यसनो से व्यसन मुक्ति की ओर बढने को प्रयत्नशील है। 'धर्मपाल' क्षेत्र मे लक्ष-लक्ष जनों के बीच मानवीय संवेदन का

बीज वपन करने का कार्य आपकी सत्प्रेरणा से आज भी चल रहा है।

साहित्य सृजन :

परम श्रद्धेय आचार्य श्री जी ने साहित्य सृजन के क्षेत्र में अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है। आपने विपुल काव्यों की रचना की है, यद्यपि वे अभीतक अप्रकाशित हैं, इसलिये समाज इन जीवनोन्नायक साहित्य सुधा का पान करने से वंचित रहा है। काव्येतर क्षेत्र में भी आपने योगसाधना तथा आगमों की जो गहन विवेचना की है, वह एक अपने आप में बेजोड़ है। अपूर्व-साधना की देन उक्त सम्पूर्ण सामग्री अभीतक अप्रकाशित है, किन्तु आपने साधुमर्यादा का कठोरता से पालन करते हुए इस समाजोपयोगी साहित्य के प्रकाशन में रंचमात्र भी वैयक्तिक रुचि का प्रदर्शन या उत्प्रेरणा का आश्रय नहीं लिया। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि अनेक उत्कृष्ट कोटि की रचनाओं को जन्म देकर भी आप उनसे असम्पृक्त रहे है। अपने नाम को गोपनीय रखने की सतत सावधानी के साथ किसी भी रचना मे संयुक्त नहीं हुए। प्रचार के इस युग में लोकैषणा से दूर रह कर आप साहित्य साधना और सर्जना में लीन है। ऐसे जन-नायक को अपनी भावभीनी श्रद्धा के साथ विनत प्रणाम कर मैं अब ग्रंथ परिचय की ओर बढ़ना चाहता हूं।

प्रस्तुत ग्रंथ :

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना श्रोताओं को गम्भीर विषय भी सरलता व सुरुचि से समझाने के विचार मे हुई है। विषय-प्रवर्तन के लिये चरितानुयोग बड़ा उपयोगी होता है। प्रभु महावीर ने भी कथानुयोग के माध्यम से गहन तत्त्वज्ञान को साधारणमति श्रोता

तक के लिये सुग्राह्य बना दिया था । श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने चातुर्मास काल में विषय प्रतिपादन हेतु जिन कथानुयोगी को चुना, उन्हें सरस बनाने के लिये काव्य-रस में ढाल लिया । राणावास चातुर्मास काल में आचार्य गुरुदेव ने 'आदर्श भ्राता' नामक खण्ड काव्य से प्रतिबोध दिया । प्रवचन के समय प्रतिदिन इस काव्य का लयमय उच्चारण करते हुए श्रद्धेय गुरुदेव ने इसका विवेचन भी किया । राणावास के सुज्ञो ने इसे लिपिबद्ध कर लिया ।

इस लिपिबद्ध काव्य को जब आशुकवि श्री नेमीचन्दजी पुगलिया ने देखा तो उनकी तीव्र अभिलाषा रही कि मैं इसे सम्पादित करू । तदनुसार उन्होंने इसका सम्पादन भी किया । संपादित कार्य के पुनरावलोकन हेतु जब श्रद्धेय आचार्य श्री जी से निवेदन किया गया तो उन्होंने छोटा-सा उत्तर दिया कि मुझे इतना समय नही है । तब आचार्य श्री जी की सुधा-सिक्त वाणी से निर्झरित काव्यरस मे अवगाहन करने के लोभ का मै संवरण नही कर सका और काव्य सागर मे डुबकिया लगाने लगा ।

श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने काव्य के अन्त मे प्रशस्ति पाठ नही रखा था, जैसा कि ऊपर लिख ही चुका हूं कि "अपने नाम को गोपनीय रखने की सतत सावधानी के साथ आप किसी भी रचना से संयुक्त नही हुए ।" किन्तु भविष्य में इतिहासकारों को इससे काफी असुविधा हो जाती है । अतः इस असुविधा के निराकरण हेतु 'प्रशस्ति-पाठ' के रूप में यत्किंचित् प्रयास भी किया गया है ।

मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि काव्य रसिकों के लिये यह काव्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा तथा व्याख्यानदाताओं को भी

इसे आधार बनाने पर विषय समझाने मे सरलता और सुविधा रहेगी। इस काव्य के सर्वजनोपयोगी होने की अडिग आस्था के साथ आचार्य प्रवर के चरण युगलों मे प्रणतिपूर्वक विराम।

—राम मुनि

मंगलाचरण

दोहे

महामन्त्र नवकारकी, महिमा अपरम्पार ।
इसे कहा-माना गया, चौदह पूरव सार ।१।
जाप किया जाये अगर-दृढ़ आस्था के साथ ।
स्वर्ग और अपवर्ग सुख-लगते सुख से हाथ ।२।
संकट टल जाते सकल-मिल जाते सुख पंथ ।
महामन्त्र नवकार की, शक्ति अचिनय अनन्त ।३।
दृढ आस्था नवकार पर—भ्रातृ-प्रेम आदर्श ।
संयम शीलाराधना, करे कथा का स्पर्श ।४।
गुरु चरणों की वन्दना-देगी मेरा साथ ।
पूज्य गणेशाचार्य का—मेरे सिर पर हाथ ।५।
प्रथम मगलाचरण की, प्रथम व्यथाहर मान्य ।
यथा तथा बनती कथा, शील सत्य प्राधान्य ।६।
बुद्धिजीवियो से यहा त्रुटिया होती क्षम्य ।
करे विवादास्पद विषय, केवल ज्ञानी गम्य ।७ ।

कथारम्भ :

तर्ज—सेवा सिद्ध सदा सुखकार

जपिये महामंत्र नवकार, जिसकी महिमा अपरम्पार ।
महिमा अपरम्पार, उस पर कथा सुनो नरनार ।ध्रुव पर।

—:०.—

जम्बूद्वीप मे 'स्वर्ण नगर है—शोभा का आगार ।
इन्द्रपुरी से ईर्ष्या करके, लिया नया आकार ।१।
ऊंचे उज्ज्वल भवनों की बस, मानो लगी कतार ।
समतावादी होने का ही, सबने किया विचार ।२।
बड़े राजपथ अथ से इति तक, नही चढ़ाव-उतार ।
समतल पर चल सकते सुख से, पुरवासी नरनार ।३।

चारों ओर वने पुर बाहर—हरे-भरे उद्यान ।
दर्शनीय रमणीय बहुत से, सौम्य प्रकृति के स्थान ।४।
नदियां वहती कहती जलका, देती है हम दान ।
दुरुपयोग मत करना जल का, रखना इतना ध्यान ।५।
बावड़ियों में सदा सुरक्षित—निर्मल-जल भण्डार ।
जीवन को निर्मल रखने की, शिक्षा सुनलो सार ।६।
शहरी जीवन से ऊबे जन-वन में जाते रोज ।
स्वच्छ-पवन-सेवन से हटता, क्या न मानसिक बोझ ।७।
धर्माभ्यासी पुरवासी जन—रखते मन संतोष ।
आने देते नही उदासी, होग, जोग, निर्दोष ।८।
विना रोक के विना टोक के, चलता था व्यापार ।
"व्यापारे वसते लक्ष्मी" का, सूत्र हुआ साकार ।९।
उचित समय पर उचित मूल्य पर, माल सभी उपलब्ध ।
खोने और कमाने में तो, मुख्य न क्या प्रारब्ध[1] ।१०।
स्त्रियां देवियां जैसी लगती, सुन्दर स्वच्छ विशेष ।
इन्हें कौन देता है बोलो, सजने का उपदेश ।११।
धर्मध्यान में खान-पान में, रखती पूर्ण विवेक ।
"गृहिणी गृह मित्या हुः" उक्ति में, सार भरा लो देख ।१२।
मन में मोद बोध जीवन में गोद नही है खाली ।
नारी के हाथों में सौंपी-दुनिया की रखवाली ।१३।
निन्दा, चुगली, ईर्ष्या, झगड़ा, मोह नही गहनों का ।
समता-जीवन जीए ऐसा जीवन शुभ बहनों का ।१४।
आते रहते साधु-साध्वियां, होते नित व्याख्यान ।
दान-शील-तप-भाव बनाते-जीवन धर्म-प्रधान ।१५।

राज-परिवार :

नृपति प्रतापसिंह शुभ प्यारे, न्याय-नीति प्रतिपाल ।
दुष्ट-सुजन हित होते है नृप बहुत कठोर-दयाल ।१६।

---
१. पूर्व उपार्जित कर्म

सुने शान्त मन और शान्त बन—सोचे-समझे बात ।
करे न्याय अन्याय नहीं नृप—वही भूपतिनाथ ।१७।
पुण्यवती पटरानी प्यारी "प्रियंकरा" शुभ नाम ।
प्रिया-क्रिया प्रिय और वाक्य के, लिए करे शुभ काम १८।
मानसिंह और अभयसिंह है, भूपति के अंगजात ।
दोंनो पुत्र मिले हैं ऐसे दाया वाया हाथ ।१९।
पतले पुसे सुखपूर्वक, विद्याध्ययन हुआ है पूरा ।
जीवन खीर ज्ञान है मानो—उस पर मीठा बूरा ।२०।
बिना विनय के विद्या भी तो, पाती है अपमान ।
विनयवान गुणवान पुरुष को, मिलता है सम्मान ।२१।
राम और लक्ष्मण-सी जोडी इन दोनो की प्यारी ।
दोनो की है शक्ल एक सी, नही अक्ल भी न्यारी ।२२।
दोनों की रुचि भिन्न नही है भिन्न नही है वाणी ।
मात्र जगत के कहने को ये—बने हुए दो प्राणी ।२३।
खाना साथ-साथ मे जाना, सोना होना साथ ।
रहना साथ-साथ ही कहना, दिन हो चाहे रात ।२४।
इन दोनों को देख बोलते पुर के उत्तम लोग ।
ये युवराजा होंगे अपने है शुभ का संयोग ।२५।
रूप-स्वभाव-कला-गुण उत्तम, उत्तम शीलाचार ।
उत्तमता ने पाया मानो अतिउत्तम आधार ।।२६।
पढ़-लिखकर होशियार हो गए और हो गए जवान ।
तेज झलकता तन के ऊपर किन्तु नही अभिमान ।२७।
यौवन का तन मन पर पडता—एक विचित्र प्रभाव ।
किन्तु सुजन जन नही छोड़ते अपना श्रेष्ठ स्वभाव ।२८।
बहुत संयमित रहते है नित—दोनो राजकुमार ।
हो न अहित, हित हो, हम सबका, करते शुद्ध विचार ।२९।

सर पाली पर :

सदा घूमने जाते दोनों—हो घोड़े असवार ।
घुड़-सवारी का था इनको, बचपन से ही प्यार ।३०।
आते समय किया करते सर पाली पर विश्राम ।
जल-छाया देने का पाया—सर ने सेवा काम ।३१।
बड़ा सरोवर बड़ा मनोहर, बड़े मनोहर घाट ।
छाया बड़ी बड़े वृक्षों की, माया बड़ी विराट ।३२।
बहुत स्त्रियां पानी भरने को, आया करती साथ ।
भीड़ लगी रहती पाली पर खुलकर होती बात ।३३।

अभद्र व्यवहार :

सुन्दर एक बालिका आई, जल भरने को सार ।
सखियां सात साथ में सुन्दर—सुन्दर गागर धार ।३४।
समवय समरुचि समकार्यों से, स्थिर होता है स्नेह ।
स्नेही स्नेही से मिलता है मिलते नहीं विदेह ।३५।
घूमघुमाकर इधर आ गए दोनों राजकुमार ।
घोड़े बांध दिए छाया में, बैठे लेकर प्यार ।३६।
राजकुमारों ने देखा है उस बाला का रंग ।
अंग-अंग अति सुन्दर देखा, देखा सुन्दर ढंग ।३७।
कन्या रूप अनन्या धन्या, कहीं न देखी ऐसी ।
गति मति अति मोहित करती है, गागर भरती कैसी ।३८।
गागर पर गागर रखवाई सखियों ने मिल करके ।
इससे ईर्ष्या की है मानो, कलियों ने खिलकर के ।३९।
मानसिंह का मन अस्थिर बन, भूल गया कुछ मान ।
रास्ता भुलवाने को जनमे मोह और अज्ञान ।४०।
सिर गागर पर गोली मारी, चूका नहीं निशान ।
छिद्र हो गया है गागर में करवाने को स्नान ।४१।

जल धारा से उस वाला का लगा भीगने गात ।
कहा अभय ने मानसिह से, उचित नहीं यह बात ।४२।
आप प्रजारक्षक हो प्यारे, रखो प्रजा की लाज ।
नही आपको शोभा देता, ऐसा अनुचित काज ।४३।
सुन भ्राता ने लाख चलाकर, छिद्र कर दिया बन्द ।
सही निशाना होने का भी, मान लिया आनन्द ।४४।

घर आंगन मे :

गोली की ध्वनि से घवड़ाई वाला चल घर आई ।
सखियों ने जो कुछ भी बीती सारी बात सुनाई ।४५।
सुनकर सेठ पिता जयमल मन—छाया क्रोध अपार ।
कैसे वच पायेगी इज्जत दौलत और व्यापार ।४६।
सहा नही जा सकता मन से किसी तरह अपमान ।
स्वाभिमान कुल आन वान सेठ कभी न प्यारे प्रान ।४७।
कर एकत्रित महाजनो को, सही सुनाऊं हाल ।
नही अकेले से हल होता कोई बड़ा सवाल ।४८।

संगठन गीत :

हरि गीत

संगठन में शक्ति भारी संगठन कर लीजिये ।
सगठन मे शक्ति प्यारी, सगठन कर लीजिये ।१।
व्यक्ति होता व्यक्ति ही है शक्ति सीमित व्यक्ति की ।
तृण वना सकता न भारी सगठन ।२।
एक से कब जोड लगती, होड़ लगती एक से ।
एक से सेना न सारी संगठन ।३।
एक अभिमत, एक इप्सित, सूत्र-शासन एक हो ।
सदाचारी प्रेमभारी, संगठन ।४।

न्याय का हो पक्ष शुभ प्रत्यक्ष पहचानों स्वयं ।
जीतता नर न्यायकारी, संगठन ।५।

तर्ज—मूल की

भेजे चर दे समाचार सुन, तजकर कारोबार ।
आये साहूकार सभा में करने सत्य विचार ।४६।
राजकुमारों ने की हरकत, न्याय नीति से बार ।
कही सेठ ने सकल कहानी, सत्य प्रमाणित सार ।५०।
पता नहीं कल क्या हो जाए, सावधान बन जाये ।
सहमत होकर सतपथ पर हम, अपना कदम बढायें ।५१।
दूरदर्शिता वह कहलाती, जो पहले ही सूझे ।
सूझे जिसे न पहले उसके, पांव न जाते पूजे ।५२।
सुनकर सारे बोले यह तो, एक बड़ा अन्याय ।
रक्षक यदि भक्षक बन जाये, हो सकता न उपाय ।५३।
इज्जत दौलत जहां अरक्षित, उस पुर में क्या रहना ।
छोड़ दिया जाए इस पुर को, यही हमारा कहना ।५४।
निर्णय लिया सभी ने मिलकर, पुर तज करके जाना ।
अमुक समय पर अमुक स्थान पर स्वय सभी को आना ।५५।

द्वार के पास :

अपने-अपने घर जाकर के, लाद लिया सामान ।
नगर द्वार पर मिले सभी जन, मिले दशों ज्यों प्रान ।५३।
खुलते ही पुर द्वार चलेगे, बांधे खड़े कतार ।
द्वारपाल ने देखा सोचा, समझा किया विचार ।५७।
प्रमुख प्रमुख जन इस पुरवाले क्यों जाते पुर छोड़ ।
क्या है बात जानने को वह आया झटपट दौड़ ।५८।
पूछा आप कहाँ जाते हो, साथ लिये परिवार ।

शहर छोड़ने का बतलावो, अपना सत्य विचार ।५९।
पुर वन एक समान मानलो, जहा न हो रखवाला ।
उन गौवों का क्या हो बोलो, पास न हो जब ग्वाला ।६०।
द्वारपाल ने कहा सुनो मै, जा आवूं नृप पास ।
फिर खोलूंगा मै दरवाजे, मानो मम अरदास ।६१।

राजसभा में :

द्वारपाल चल आया नृप से, बात सुनाई सारी ।
स्त्री, बालक, धन, लेकर, पुर को, छोड़ चले व्यापारी ।६२।
राजा बोला, उन्हे बुलावो क्या कारण मे जानूं ।
सुनू न्याय की बात सभी की, पक्षपात क्यो ठानू ।६३।
द्वारपाल ने आकर बोला, चलो नृपति बुलवाते ।
उन्हे सूचना दिए बिना ही आप चले क्यो जाते ।६४।
प्रमुख व्यक्तियो को ले जयमल, राज सभा मे आया ।
सविनय नरपति के चरणो मे अपना शीश झुकाया ।६५।
नरपति ने सबको बिठलाया, किया बड़ा सत्कार ।
पृथ्वीपति ने पूछा ऐसे, दिखला कर दिल प्यार ।६६।
कष्ट आपको क्या है ? पुर मे, कहो बात समझाय ।
बिना कहे क्या कभी रोग का होगा कही उपाय ।६७।
मेरे होते हुए शहर मे हुआ कहां अन्याय ।
जिससे छोड़ चले हो पुर को, दो कारण समझाया ।६८।
इतने मे जयमलजी बोले, क्षमा करे प्रतिपाल ।
न्यायपरायण नृपति आप सम, देखा नही दयाल ।६९।
किस तरह का कष्ट आज तक, नही किसी ने पाया ।
करे शिकायत कैसे झूठी, लेकिन संशय छाया ।७०।
जब इज्जत पर आ बनती हो, तब रहना दुश्वार ।
बीती घटना खोल सुनाई, राजा के दरबार ।७१।

सुनकर स्तंभित और अचंभित, वना स्वयं भूपाल ।
अपराधी है मेरे वेटे, कितना कठिन सवाल ।७२।

आश्वासन और न्याय :

सुनकर सिर धुनता है नरवर, पछताता है मन मे ।
ऐसी वाते सुनी न सोची, अव तक के जीवन मे ।७३।
चाहे मै ही होऊं चाहे सुत हो मेरे प्यारे ।
सवसे प्यारा न्याय, न्याय के, नृप होते रखवारे ।७४।
न्याय कूप खाई वाला है अन्तर मन अकुलाता ।
आखिर मन को पक्का करके, नृप ऐसे फरमाता ।७५।
जाओ, मत घवराओ, भाई । हो जायेगा न्याय, ।
अपने को क्यों माना जाये, दीन हीन असहाय ।७६।
न्यायभरा आश्वासन पाकर, सभी लोग हरषाये ।
धन्य धन्य नृप के गुण गाते, अपने घर पर आये ।७७।
नृपति न्यायप्रिय और सत्यप्रिय, विरले ही मिलते है ।
सत्ता-वृद्धावस्था मे क्या दात नही हिलते है ।७८।
पुत्र नही हो जिसको प्यारे, न्याय प्रजा हो प्यारे ।
ऐसे राजा की आज्ञा को, दुश्मन भी स्वीकारे ।७९।

देश निर्वासन :

दृढ़ निश्चय के साथ, हाथ से, लिखा नृपति ने पत्र ।
यत्र तत्र सर्वत्र न्याय का, तेजोमय नक्षत्र ।८०।
आशीर्वाद पिता का पहले, फिर निर्वासन दण्ड ।
वसुधापति स्वर्पति का शासन, माना गया अखंड ।८१।
सायंकाल सरोवर तट पर जो कन्या के साथ ।
दुर्व्यवहार किया था घट पर, गोली मारी हाथ ।८२।
अपने कुल की उज्ज्वलता पर दाग लगाया भारी ।
कभी छिपी रह सकती है क्या, लगी वस्त्र पर कारी ।८३।

मुझे न अपना मुख दिखलाना, जाना सीमा छोड़ ।
आठ प्रहर का समय दे रहा, इसे न देना तोड़ ।८४।
आज्ञा के उल्लंघन पर फिर, प्राण दंड पावोगे ।
मेरे प्यारे पुत्रो । मेरी आज्ञा अपनावोगे ।८५।
न्यायासन पर स्थित निश्चित मैं, पिता नहीं हूं प्यारा ।
तुम न पुत्र हो मेरे प्यारे, लिखूं पत्र के द्वारा ।८६।
पढ़ा पत्र फिर कर हस्ताक्षर, चर के साथ पठाया ।
नरपति के नेत्रों के सम्मुख, अंधेरा सा छाया ।८७।

संकट के पूर्व संकेत :

इधर सरोवर पर से लौटे, दोनो राजकुमार ।
अपने अपने राजमहल मे सुख से गये पधार ।८८।
भोजन समय किया है भोजन, समय शयन का आया ।
सकट का संकेत समझलो, अग फरूका बाया ।।८९।
मानसिह मन चिन्ता छाई, क्यो यह गात्र फरूका ।
क्या मैं कुल की मर्यादा से, आज कही पर चूका ।९०।
चिन्ता मे खोये-खोये से सोये नींद न आई ।
जल दर्शन कब होने देती, जमी-जमाई काई ।९१।
अभयसिह की भी यह हालत नींद न आने पाई ।
शय्या पर से उठकर आया, जहां मानसिह भाई ।९२।
बायां नेत्र फड़क रहा है, चैन नही है मन मे ।
संकट की यह पूर्व सूचना, अस्थिरता चिन्तन मे ।९३।
भाई से भाई यो बोला, यही परिस्थिति मेरी ।
धरो धैर्य अस्थैर्य तजोमन, पक जायेगी केरी ।९४।
आज सरोवर की पाली पर, जो कुछ हम कर आये ।
संभव है उससे सम्बन्धित, दुख आये मुंह बाये ।९५।

घबराने की नहीं जरूरत, आवो सोवो सुख से ।
सुख में सुख से नहीं किसी ने कहा था उसे दुख में ।९६।
अपनी अपनी शय्या पर जा, सोगे राजकुमार ।
थोड़ी-सी निद्रा ले करके, पाई शान्ति अपार ।९७।

प्रातःकालीन चिन्तन :

उठे उषा होने से पहले, करते चिन्तन अपना ।
कैसा यह दुनियावी वैभव, मानो मीठा सपना ।९
जीने को पशु भी जीते है, विशेषता क्या नर की ।
अगर न वह धार्मिक बन पाये, तो स्थिति घटिया स्तर की ।९
निज-पर-हित-साधन, आराधन, धर्मध्यान के द्वारा ।
कर पाये जो मानव, उसका, जीना सार्थक सारा ।१०
चिन्तन की गहराई में ही, मिलते उज्ज्वल मोती ।
अनुभव की डोरी मे आत्मा, रहती उन्हे पिरोती ।१०
घटना आई याद शाम की, मन मे कुछ दुख आया ।
इतने में वह चर राजा का, लिखा पत्र भी लाया ।१०

पढ़ो और बढ़ो :

नमस्कार कर चर ने कागज, दिया कुंवर के हाथ ।
मुख से कही नही जा सकती, जो दुःख वाली बात ।१०३
चला गया चर इधर कुंवर ने, पत्र पढा है खोल ।
मुख पर दुख की रेखा उभरी, निकल न पाये बोल ।१०४
किये कार्य पर पछतावे से, नयनों मे जल आया ।
जैसा कर्म किया उसका यह, पका हुआ फल पाया ।१०५
पूछ रहा है अभय बात क्या ? बोलो मेरे भैया ।
जीवन नैया एक हमारी हम है दो खेवैया ।१०६
पढ़ा दिया है पत्र पिता का, लगे मंत्रणा करने ।

भावी के कुछ चित्र नेत्र के, सम्मुख लगे उतरने ।१०७।
आज्ञा पालन करने में ही उत्तमता है अपनी ।
आजीजी करने की माला, हमे नही है जपनी ।१०८।
पूर्व कर्म के जो भी सुख-दुख यहां वहां पायेंगे ।
किसी परिस्थिति मे डरने का, पंथ न अपनायेंगे ।१०९।
करो तैयारी आज रात में चल देना है घर से ।
करें प्रार्थना परमेश्वर से, समता का जल वरसे ।११०।
कर सारी तैयारी सोये, नीद न आने पाई ।
सोने दूं होने दूं दु:ख क्यों, पल चलने की आई ।१११।
नित्य क्रिया से निवृत्त होकर वनकर हृदय उदार ।
हो निर्भय हय लेकर अपने, निकले राजकुमार ।११२।

चिन्तन की चांदनी :

मानसिंह दोषी, निर्दोषी, अभयसिंह था प्यारा ।
भ्रात प्रेम की पूर्ण पालना, होती इसके द्वारा ।११३।
मैं भाई का साथ निभाऊं जाऊं वन में संग ।
दु:ख नहीं कर पा सकता है, भ्रात प्रेम में भंग ।११४।
छोड़ा राजपाट वैभव सुख राजमहल भी छोड़ा ।
माता-पिता-परिवार-स्वजन का, स्नेहमयी दिल तोड़ा ।११५।
लछमन भैया गया नही क्या, गये राम जब वन मे ।
रामायण के आदर्शो को ढालोगे जीवन में ।११६।
विपदाओं से जो घवराते, वे कायर कहलाते ।
शूरों की है यही सम्पदा, हिम्मत से डट जाते ।११७।
लडो नही भाई-भाई से, लेलो शिक्षा सार ।
सोचो, समझो, सुनो सयाने, जीना है दिन चार ।११८।
किसके लिए लडा जाये जी क्या कुछ उत्तर दोगे ।
कुछ भी नही हमारा जग में, लड़कर क्या पा लोगे ।११९।

सब कुछ वैभव एक तरफ है, एक तरफ है प्यार ।
प्यार बराबर कभी न तुलता, नहीं का भण्डार ।१२०।
राम और लक्ष्मण-सी जोड़ी, मान अनाथ की मानी ।
विरले ही होते हैं जग में, ऊँचे ज्ञानी प्रानी ।१२१।
कर्मवीर नर धर्मवीर बन, कर सकते कल्याण ।
जाना है वीरत्व त्याग में, आत्मिक शक्ति महान ।१२२।
अनासक्ति में सोना गात्, जीवन के प्रत्यंग ।
राजभवन वनवन में विरत्, परिणामी शुभ रंग ।१२३।
जो कुन्दन बनने जाता वह सोना सहता ताप ।
बिना तपे क्या कट जाते हैं जन्मान्तर के पाप ।१२४।

वन बनाम विद्यालय :

पुर की ओर मुँह करके भी, देखा नहीं दुबार ।
जिसे छोड़कर के जाना है, उससे कैसा प्यार ।१२५।
वन में मन है, मन में वन है, वन की ओर प्रयाण ।
शकुन और अपशकुन नहीं कुछ, जिस पर दें वे ध्यान ।१२६।
जंगल नहीं अमंगलकारी, मंगल अगर विचार ।
जंगल में भी मंगल होता, जो ले शरण चार ।१२७।
शांति भ्रांति के वृक्ष खड़े हैं, दूर और नजदीक ।
नहीं किसी ने कहा किसी से, ठीक और बेठीक ।१२८।
वल्लरियें सुख पूर्वक पसरी, नहीं अड़ाती टांग ।
नहीं किसी ने कहा किसी से, देखो इसके स्वांग ।१२९।
जीव-जन्तु अपने रास्ते से, जाते आते रहते ।
इसको मारो इसको लूटो नहीं परस्पर कहते ।१३०।
हमको जैसा जीने का हक, हक्क है सबको वैसा ।
अधिकारों की छीना झपटी झंझट भी है कैसा ।१३१।

कभी तेजगति कभी मंदगति पवन बनाता चलता ।
अपनी गति से चलने वाला पाता क्यों न सफलता ।१३२।
सहस्त्रांशु की उष्ण रश्मियां, धरती को न तपाती ।
तरुओं की छाया से शीतल, जब वसुधा की छाती ।१३३।
दौड़ रहे है इत-उत वानर, सुनकर सिंह आवाज ।
क्योंकि समूचे वन पर करता, सिंह अकेला राज ।१३४।
चीते, भालू और बघेरे, हरिण दौडते दीखे ।
भय आने पर जान बचाने, कौन नहीं कहां चीखे ।१३५।
वनहस्ती मस्ती में आकर, डोल रहे है वन में ।
कहते हमने बल पाया है शाकाशी जीवन में ।१३६।
वन महिषों की कहीं लड़ाई नहीं नजर क्यों आती ।
हर जीवन में ही होते है, साथी और अराती ।१३७।
शशक झाडियों में छिपकर के देख रहे दुश्मन को ।
रुकने को कहते है, आगे-खतरा है जीवन को ।१३८।
वन का भाव जलाती आती, नजर कही पर आग ।
कथा कषाय जलाया करने, त्याग और वैराग ।१३९।
मनमानी यति ध्वनि से चलता, निर्झर वाला पानी ।
अपना रास्ता स्वयं ढूंढने, ऊंचे साधक ज्ञानी ।१४०।
सदियों से बहती है नदिया, बन्धन नही किसी का ।
पवित्रता से जीवन जियो, जीना नाम इसीका ।१४१।
ऊंजी ऊंची पर्वत माला, चढने को कहती है ।
जीवन की ऊंचाई पर ही, अच्छाई रहती है ।१४२।
सीधे आटे काटे कहते, हम पर हाथ न डालो ।
बुलवाओगे और किसी को, भाई इन्हे निकालो ।१४३।
खिलते स्वयं, स्वयं मुरझाते, रंग बिरंगे फूल ।
जन्म मत्यु की अटल प्रक्रिया, प्रकृति ने अनुकूल ।१४४।

रास्ता कौन दिखाए वन में नर न वहां जब होते ।
चाहे कोई भूले भटके, चाहे खाये गोते ।१४५।
पाना पार कठिन है वन का, पाना सरल प्रवेश ।
देना सरल बहुत मुश्किल ज्यों, लौटाना आदेश ।१४६।

मुनि दर्शन और नवकार :

दोनों भाई वीर बहादुर, वन में चलकर आये ।
भूख लगी जब वन में चुनकर, फूल और फल खाये ।१४७।
देखे अगर परस्पर देखे, बोले तो वे बोले ।
पुर निष्कासन वनागमन लख, नही धैर्य से डोले ।१४८।
जो था राजभवन में मन मे, आज वही उल्लास ।
वर्तमान में जीना जाने वह क्यों बने उदास ।१४९।
स्मृति हो भूतकाल की भय हो, भावी का जीवन में ।
वह जीवन मुरझा जाता है, उलझन ही उलझन में ।१५०।
थक जाने पर रुके स्वयं ही वड़े वृक्ष के नीचे ।
क्या न देखता पथिक प्रेम से, अपने आगे पीछे ।१५१
तरुवर गहरी छाया में, दीखे मुनि ध्यानस्थ ।
एकाग्रता बनी आकारित, स्वस्थ पूर्ण अलमस्थ ।१५२।
वन मे मुनि का दर्शन पाना, क्या न सुकृत का फल है ।
उदय समय के साथ वदलता, कर्म प्रकृति चंचल है ।१५३।
मुनिवाणी सुनने को उत्सुक, मन इनका हो आया ।
वन्दन करके वैठ गये है, समता-भाव सजाया ।१५४।
ध्यान पार कर गुरुवर मुख से बोले अमृतवाणी ।
मुनिवाणी ने सुन पावे जो हो हलुकर्मीप्राणी ।१५५।
अशुभ और शुभ कार्य जगत में, दुःख सुख के दो मूल ।
प्रकृति के प्रतिकूल एक है, एक बहुत अनुकूल ।१५६।
सुख में हसना दुःख मे रोना, यही बड़ी है भूल ।

सूक्ष्मदृष्टि से देखो भाई, छोड़ो कारण स्थूल ।१५७।
तीर्थंकर चक्रीश्वर पर भी, चक्र कर्म का चलता ।
सक्षम वीज अवश्य समय पर, देखा सवने फलता ।१५८।
कर्म कांटने का रास्ता है, परिणामों की समता ।
कर्म बांवने का राष्ता है, ममता तथा विषमता ।१५९।
महामन्त्र नवकार श्रद्धा से, जपते जो नर–नार ।
वे भव सागर से तर जाते, पाते सुख श्री कार ।१६०।
सोमा ने नवकार जपा था, श्रेष्ठभाव दिल धार ।
सांप वना फूलों की माला, चकित बना परिवार ।१६१।
सेठ सुदर्शन की सेवा में, वनी सिहासन चूली ।
चंपा के दरवाजे खोल, नही सुभद्रा भूली ।१६२।
महामंत्र की महिमा का क्या, पाया जाये पार ।
चौदह पूर्वो का इसमे ही, भरा पड़ा है सार ।१६३।
चमत्कार का पार न कोई, जो होवे दृढ आस्था ।
खुला पड़ा है उसके खातिर, स्वर्ग मोक्ष का रास्ता ।१६४।
मन के सकल मनोरथ फलते टलते संकट सारे ।
शर्त एक ही है वस, मनगत, संशय प्रथम निवारे ।१६५।
अभयसिह के मन को आया, सीख लिया नवकार ।
नमस्कार कर ध्यारूढ़ हो, चलते राजकुमार ।१६६।

प्यास और तलाश :

महाभयंकर गरमी से अब, लगी सताने प्यास ।
आसपास मे जल मिलने की, रही न मन को आश ।१६७।
प्यासे तन मन प्यासे नैना ढूंढ रहे है पानी ।
पानी बिना नही रह पाते, जीवित जग के प्राणी ।१६८।
अन्न विन चल सकता है पर, जल के बिना न चलता ।
जल को जीवन कहने में है, कवि की पूर्ण सफलतां ।१६९।

जल जल करते पल पल मुश्किल बीता करती भाई ।
जल की क्या कीमत है ? ऐसी उचित न बेपरवाही ।१७०।
कहां मान ने चलने मे अब, शक्ति नहीं है मेरी ।
ढूंढ कही से जल ले आवो, करो न किंचित देरी ।१७१।
बिठला कर शीतल छाया में, अभय ढूंढ़ता पानी ।
मैं भी तो प्यासा हूं ऐसी नहीं निकाली बानीं ।१७२।
भाई का विश्वास लिए मन, भूल गया है प्यासा ।
गया अभय जल ले आयेगा, लगी मान को आशा ।१७३।

पीने के बाद :

वही कही पर एक सरोवर, नजर अभय के आया ।
धोये हाथ पैर जल पीया, दोना एक बनाया ।१७४।
ज्येष्ठ बधु के खातिर जल भर, चला प्रेम से आता ।
एक किनारे स्तम्भ देखकर, इचरज मन मे आता ।१७५।
बने गोखड़े दो अति सुन्दर, शिल्प कला उत्कृष्ट ।
कला कला प्रिय लोगो के मन, कर लेती आकृष्ट ।१७६।
बनी मूर्तियां दो दोनो मे, बोल रही वे मुख से ।
ऐसा ही लगता है मानो, अवलोकन के रुख से ।१७७।
एक महालक्ष्मीजी उनमें, एक महाकाली जी ।
बड़ी देवियां दोनों जग मे, अर्थ-शक्ति वाली जी ।१७८।
शिला लेख है एक पास में, जिसकी प्राकृत भाषा ।
देख अभयसिह को हो आई, पढने की अभिलाषा ।१७९।
पीना नही सरोवर का जल रहना यहा न रात ।
उल्लंघन करने पर होगा नाश और उत्पात ।१८०।
चार कोस की परिधि बड़ी है, पढ़ो पथिक जन पहले ।
इतने पर भी जो नर रहले-वेगहले दुःख सहले ।१८१।

अभय सभय हो लगा सोचने, अब क्या होगा भाई ।
मैने तो इस पानी से ही प्यास अभी बुझाई ।१८२।
ज्येष्ठ बधु को सलिल पिलाने भरा साथ में दोना ।
प्यासा कैसे उसे रखूं मै, होगा जो कुछ होना ।१८३।
जान चुका है खतरा फिर भी, मन न सम्भल पाया है ।
अन्न जैसा मन "पानी जैसी वानी" सच गाया है ।१८४।
अगर नही जाने जो पहले तो नर का क्या दोष ।
कहने सुनने वाले कहते करो नहीं अफसोस ।१८५।
जानबूझकर जो न टले तो होनहार[1] बलवान ।
बड़ो बड़ो के हाथो होते अनरथ क्या न महान ।१८६।
महामन्त्र नवकार पास मे, धैर्य और पुरुषार्थ ।
यदि आयेगा टल जायेगा कष्ट यही भावार्थ ।१८७।

वन की रात :

आया नीर पिलाया तन मे, मन मे छाया हर्ष ।
भ्रातृ-प्रेम का रखा अभय ने, यह ऊंचा आदर्श ।निज।१८८।
तू न साथ में आता वन में, तो क्या होता हाल ।
कष्ट अकेला ही मै पाता, लेता कौन सभाल ।१८९।
कुछ क्षण रुक कर कहा अभय ने, उठो चले अब भाई ।
अभी न उतरी थाक ज्येष्ठ ने, अपनी स्थिति बतलाई ।१९०।
गिरती जाती देह देख तू, पीड़ा देते पैर ।
यही रहेगे रात बात सुन, इसमे ही है खैर ।१९१।
मेरे से न चला जाता है, मैं सुख से सोऊंगा ।
तभी चलूंगा आगे भैया, स्वस्थ जभी होऊंगा ।१९२।
वन मे जीवन-धन पर भैया, उतने कष्ट अनेक ।
चलो गांव मे पहुंच कही पर, आश्रय लेगे देख ।१९३।

---
१. पूर्वबद्ध निकाचित कर्म

कहा मान से मान बात तू भय को दूर भगा दे ।
घास फूस तृण लाकर मेरी, शय्या अभी लगा दे ।१९४।
बात अभय ने कही न कुछ भी, जो कुछ पढ़ कर आया ।
मन में ही रख लिया सभी कुछ, भैया को न बताया ।१९५।
शय्या पर सो गया मानसिंह, अभयसिंह जगता है ।
स्मरता है नवकार मन्त्र मन, भय न जरा लगता है ।१९६।
संकट निश्चित आयेगा ही सावधान रहना है ।
'गाफिल खाता मार' पारखी लोगों का कहना है ।१९७।
वन में अंधेरा है केवल, मन में दृढ़ विश्वास ।
महामन्त्र का स्मरण आचरण देता नया प्रकाश ।१९८।
मेरी पहरेदारी में ये मेरे भैया सोये ।
मेरे होते हुये इन्हे क्यों, कष्ट जरा भी होये ।१९९।

प्रकाश का भ्रम :

मन में विविध कल्पनाओं का, जाल बिछा है भारी ।
प्रश्न नहीं निद्रा आने का, करता पहरेदारी ।२००।
इधर हो रही सिंह गर्जना, कड़ी तर्जना जैसी ।
अंतरमन की अधिक वर्जना, स्थिति बनती तब कैसी ।२०१।
अभय डुकन्ना पर चौकन्ना होकर खड़ा हुआ है ।
नहीं आज तक कही युद्ध में, अरि से लड़ा हुआ है ।२०२।
क्षण क्षण घरके प्रहर रात्रि का, आया है अवसान ।
सहसा बिजली सी चमकी है, गया उसी पर ध्यान ।२०३।
वही प्रकाश इधर आता सा, देने लगा दिखाई ।
दिल की धड़कन तेज हो गई, सूई सी खिसकाई ।२०४।
अभय स्वांग करके सोने का, सोया चादर तान ।
देख रहा है उसी ओर बस, ले मुट्ठी में प्रान ।२०५।

चादर में कर छिद्र भद्र मन, देख रहा है हाल ।
पता न क्या होने वाला है हे प्रभु ! दीनदयाल ।२०६।
मन ही मन में महामन्त्र का, स्मरण कर रहा ताजा ।
कहता रे मन । क्या डरना है संकट । आजा आजा ।२०७।
इतने मे दो दिखी देवियां, खडी सामने अपने ।
अभय समय बन गया समय पर, लगा मन्त्र स्वर जपने ।२०८।
एक भयकर एक शुभकर, रूप नजर में आया ।
इन दोनों का मेल कहां से, किसने साथ बिठाया ।२०९।

देवियों की बात :

काली लक्ष्मी से कहती है कौन नराधम सोये ।
क्या इनने अपने जीवन से, हाथ अभी ही धोये ।२१०।
करूं वार तलवार खींचकर, पार इन्हे पहुंचाऊं ।
आज्ञा उल्लंघन का दंड दे, अपना रोष मिटाऊं ।२११।
अभय सोचता मरना ही है, लूं शरना स्वीकार ।
महामन्त्र नवकार स्मरण का, चमत्कार तैयार ।२१२।
लक्ष्मी के मन दया आ गई, काली जी से बोली ।
इनको पता न होगा इसका, सुन लो मैया भोली ।२१३।
मेरा विनय सुनो कालीजी, माफ करो अपराध ।
याद रखेंगे ये भी पाया माई का परसाद ।२१४।
मधुर वचन सुन लक्ष्मीजी के, शांत हो गई काली ।
जो तलवार निकाली बाहर, भीतर उसको डाली ।२१५।
मैंने छोड़ दिया है इनको, ले तेरे कहने से ।
लेकिन क्या ये बच पायेंगे इस वन मे रहने से ।२१६।

रहस्य का उद्घान :

आने वाला ही है राक्षस, वो इनको मारेगा ।
मानव-मासारी वह इनसे, कभी नहीं हारेगा ।२१७।

कहा मान से मान बात तू भय को दूर भगा दे ।
घास फूस तृण लाकर मेरी, शय्या अभी लगा दे ।१९४।
बात अभय ने कही न कुछ भी, जो कुछ पढ़ कर आया ।
मन में ही रख लिया सभी कुछ, भैया को न बताया ।१९५।
शय्या पर सो गया मानसिंह, अभयसिंह जगता है ।
स्मरता है नवकार मन्त्र मन, भय न जरा लगता है ।१९६।
संकट निश्चित आयेगा ही सावधान रहना है ।
'गाफिल खाता मार' पारसी लोगों का कहना है ।१९७।
वन में अंधेरा है केवल, मन में दृढ़ विश्वास ।
महामन्त्र का स्मरण आचरण देता नया प्रकाश ।१९८।
मेरी पहरेदारी में ये मेरे भैया सोये ।
मेरे होते हुये इन्हें क्यों, कष्ट जरा भी होये ।१९९।

प्रकाश का भ्रम :

मन में विविध कल्पनाओं का, जाल बिछा है भारी ।
प्रश्न नहीं निद्रा आने का, करता पहरेदारी ।२००।
इधर हो रही सिंह गर्जना, कड़ी तर्जना जैसी ।
अंतरमन की अधिक वर्जना, स्थिति बनती तब कैसी ।२०१।
अभय इकला पर चौकन्ना होकर खड़ा हुआ है ।
नहीं आज तक कहीं युद्ध में, अरि से लड़ा हुआ है ।२०२।
क्षण क्षण घरके प्रहर रात्रि का, आया है अवसान ।
सहसा बिजली सी चमकी है, गया उसी पर ध्यान ।२०३।
वही प्रकाश इधर आता सा, देने लगा दिखाई ।
दिल की धड़कन तेज हो गई, सूई सी खिसकाई ।२०४।
अभय स्वांग करके सोने का, सोया चादर तान ।
देख रहा है उसी ओर बस, ले मुट्ठी में प्रान ।२०५।

चादर में कर छिद्र भद्र मन, देख रहा है हाल ।
पता न क्या होने वाला है हे प्रभु ! दीनदयाल ।२०६।
मन ही मन में महामन्त्र का, स्मरण कर रहा ताजा ।
कहता रे मन । क्या डरना है संकट । आजा आजा ।२०७।
इतने में दो दिखी देवियां, खड़ी सामने अपने ।
अभय समय बन गया समय पर, लगा मन्त्र स्वर जपने ।२०८।
एक भयंकर एक शुभकर, रूप नजर में आया ।
इन दोनो का मेल कहां से, किसने साथ बिठाया ।२०९।

देवियो की बात :

काली लक्ष्मी से कहती है कौन नराधम सोये ।
क्या इनने अपने जीवन से, हाथ अभी ही धोये ।२१०।
करूं वार तलवार खींचकर, पार इन्हें पहुंचाऊं ।
आज्ञा उल्लंघन का दंड दे, अपना रोष मिटाऊं ।२११।
अभय सोचता मरना ही है, लूं शरना स्वीकार ।
महामन्त्र नवकार स्मरण का, चमत्कार तैयार ।२१२।
लक्ष्मी के मन दया आ गई, काली जी से बोली ।
इनको पता न होगा इसका, सुन लो मैया भोली ।२१३।
मेरा विनय सुनो कालीजी, माफ करो अपराध ।
याद रखेगे ये भी पाया माई का परसाद ।२१४।
मधुर वचन सुन लक्ष्मीजी के, शांत हो गई काली ।
जो तलवार निकाली बाहर, भीतर उसको डाली ।२१५।
मैंने छोड़ दिया है इनको, ले तेरे कहने से ।
लेकिन क्या ये बच पायेगे इस वन में रहने से ।२१६।

रहस्य का उद्घान :

आने वाला ही है राक्षस, वो इनको मारेगा ।
मानव-मासारी वह इनसे, कभी नहीं हारेगा ।२१७।

जागरण यह धर्मध्यान की, तोड डालती बन्धन ।
शीतलता उपजाया करता, घृष्ट लिप्त ज्यों चन्दन ।२४३।

राक्षस का आगमन :

खटखट फटफट आहट सुनकर, सावधान मन होता ।
चाहे वन पशु पवन न क्यों हो, प्यारा जीवन होता ।२४४
बात करे किससे उस वन में, किसका थामे हाथ ।
एक सहारा महामंत्र का, यही त्रिलोकीनाथ ।२४५।
बीती आधीरात बराबर, लगा घूमने महितल ।
कर्कश ध्वनि कानों में आती, मच जाती है खलबल ।२४६।
महाभयंकर राक्षस आया, जिसकी काली काया ।
महाकाल की छाया मानों, कहता खाया खाया ।२४७।
लंबे लंबे खंभों जैसे लंबे लंबे पांव ।
सूखी हुई टहनियों को ये, हाथ दे रहे दांव ।२४८।
लाल सूर्ख है दोनों आंखें, मानों रक्त बरसता ।
लपलप जीभ निकलती कहती, इसका जीव तरसता ।२४९।
एक पांव धरती पर पडता, और ऊपर आकाश ।
अट्टहास करता जोरों से, लेकर लंबा सांस ।२५०।
आकर वहीं रुका है राक्षस, जहां सहोदर सोये ।
देख अभय गर रोये तो भी, कैसे चुपके रोये ।२५१।
थर-थर काप रही है काया, मानों लगती ठंड ।
अपराधी को मिलता मानों, प्राणघात का दंड ।२५२।
तन का मन का और वचन का, बल न रहा है शेष ।
मानो मौत पकड़ पीछे से, खींच रही है केश ।२५३।
अभी अभी बस राक्षस के मुख, जाना मर जाना है ।
छोड़ कल्पनायें जीवन की, यम के घर जाना है[1] ।२५४।
राक्षस ने ली छुरी हाथ मे, हाय मारने वाली ।
इतने में मन लगा पूछने, छोड़ गई क्यों काली ।२५५।

---

१. परभव जाना है ।

मेरे से पहले इस वन में, आया करती काली ।
इनको मारे विना यहा से, चली गई क्यों खाली ।२५६।
कुछ न समझने पाया आखिर, मन से उत्तर पाया ।
उसने मारा नही इन्हें तो इसमें भेद समाया ।२५७।
अगर मारना होता, तो वह क्यों न मार कर जाती ।
क्योकि हमेशा आती काली, हाहाकार मचाती ।२५८।
चलो इन्हे मै भी क्यो मारू, ढूढू और शिकार ।
क्या न वदल जाया करते है पल मे बुरे विचार ।२५९।
वस राक्षस भी छोड़ गया है, चिन्तन करके मन में ।
अभय सोचने लगा शक्ति है, महामत्र सुमिरन मे ।२६०।
दो दो बार बचा है जीवन महामंत्र के द्वारा ।
श्रद्धा भक्ति वढी है मन की लगा मंत्र जय प्यारा ।२६१।
चिन्तन की गहराई कहती धन मानवभव पाये ।
क्षेत्र आर्यकुल उत्तम पाया, जिनवाणी सुन पाये ।२६२।
पितु आज्ञा से वन मे आये, फिर भी आनन्द सार ।
मुनि प्रवचन मे सुना श्रेष्ठतम, महामंत्र नवकार ।२६३।
महामत्र से सकट टलते, यही वीर फरमान ।
जो भी मानव इसको ध्यावे, हो जावे कल्यान ।२६४।
पुण्य प्रबल जिसका होता है, उसका सब ससार ।
जहा कही भी वह रहता है, पाता आनन्द सार ।२६५।
आधी रात हो गई जगते, मन का धैर्य न खोया ।
खड़ा खड़ा भी पूरा आधा अभयसिह नही सोया ।२६६।
भाई की रक्षा करता है, रक्षा अपनी साथ ।
वात किए जाता है मन से, अपने मन की बात ।२६७।

सांप का आगमन :

इतने मे वह मणिधर आया, बारह फण को धार ।
मणि से मंडित शोभा पाता, मस्तक बड़ा उदार ।२६८।
सारे वन में जोर-जोर से, मार रहा फुफकार ।
चढ़ा एन तरुवर पर सीधा, देखे दृष्टि पसार ।२६९।
मणि को तरु पर रख देने से, फैला भव्य प्रकाश ।
दिन है अथवा रात, बात पर, कौन करे विश्वास ।२७०।
तरु से उतर आ गया नीचे, करने लगा विचार ।
इच्छापूर्वक आगे बढ़ता, छोर अरण्य मजार ।२७१।
अभयसिह ने देखा मणिधर, अन्य दिशा में जाता ।
मणि वह पड़ी सामने तरु पर, देख देख हरषाता ।२७२।
मणि को करू हस्तगत अथ मो, बने तभी कुछ काज ।
साहस सत्व परीक्षण का यह अवसर आया आज ।२७३।
चला गया जब साप दूर तब, अभयसिह उठ आया ।
मन को लगता अभी सोप मुड़ आया मानो खाया ।२७४।
कभी अभय, भय कभी चित्त पर, डाल रहा है छाया ।
अभयसिह ने साहस करके आगे कदम बढ़ाया ।२७५।
मणि की चमक भाग्य चमकाने, चमक रही है चमचम ।
चमकाने को भाग्य लोग क्या करते नही परिश्रम ।२७६।
मणि को कैसे लिया जाय यह लगा सोचने युक्ति ।
कवि भी सोच लिया करते है दोप न हो पुनरुक्ति ।२७७।
गया सरोवर की पाली से लाया मिट्टी गीली ।
गीली मिट्टी इसे चाहिए, चाहे काली पीली ।२७८।
कुछ कांटे लाया आया, उसी वृक्ष के पास ।
मिल जाता है पुरुषार्थी को, रास्ता और प्रकाश ।२७९।

तरुवर पर चढकर उस मणि पर, गीली मिट्टी डाली ।
मिट्टी पर डाली है फिर तो, झाड़ी कांटो वाली ।२८०।

सांप मर गया :

तरु से उतर आ गया नीचे, चढ़ा दूसरे तरु पर ।
क्या होता है खेल देखता, मणि पर नजर टिका कर ।२८१।
इधर सांप घबराया आया, उसको भारी क्रोध ।
मणि को चुरा ले गया जो नर, सुझ न बड़ा अबोध ।२८२।
जहां रखी मणि घर वापिस, लौट वही पर आया ।
चढा वृक्ष पर देख रहा है, तन मन से अकुलाया ।२८३।
अपने बारह फण फुलाकर, मार रहा फुफकार ।
लेकिन मणि पर आज हो गया, औरो का अधिकार ।२८४।
कांटों मे फस गया स्वयं ही, जब उसने फण मारे ।
क्रोधी लोभी कामी होते, दया पात्र बेचारे ।२८५।
काटो से छिल गई देह, आई, पा न सका मणि प्यारी ।
हुई सांप की स्थिति अब ऐसी क्षण भर मे मरने वारी ।२८६।
कितना ही मन क्रोध करे पर मणि न हाथ अब आती ।
क्रोध शांत कैसे हो जिसको, दुर्गति खड़ी बुलाती ।२८७।
क्रोध किसी पर भी मत करना, क्रोध महा भयदाता ।
अत समय का क्रोध, अंत में क्या न नरक ले जाता ।२८८।
बारह फणधारी मणिधारी, मरा सांप उस वन में ।
बिगड़ गई गति उसकी, गुस्सा लिए मरा जो मन में ।२८९।

मणि और अभय :

अभयसिंह तरुवर स्थित मन में, जपता है नवकार ।
मणिधर मरा जानकर उतरे, मन मे हिम्मत धार ।२९०।
निर्भय बनकर तरु पर चढ़कर, कांटे दूर हटाये ।
मिट्टी दूर हटाई हाथों, चमकीली मणि पाये ।२९१।

मणि को लिया हाथ में, मन में-तन में खुशियां छाई ।
पता नहीं किस पुण्योदय से, आज श्रेष्ठ मणि पाई ।२६२।
सोचा अब भी मेरे सिर पर सकट आने वाले ।
लेकिन क्षत्रिय पुत्र न होते, मन घबड़ाने वाले ।२६३।
आया वहीं जहां पर सोये अपने अग्रज प्यारे ।
मणि का क्या करना अब मन से सोचे और विचारे ।२६४।
मरने वाला हूं मैं जब क्यों, मणि को लेना साथ ।
जीयेगे ये राज्य करेंगे मानसिंहजी भ्रात ।२६५।
राज्य के मालिक बड़े भ्रात है मेरा क्या अधिकार ।
वैसे भी मेरा हक नही है किंचित् मात्र लिगार ।२६६।
चिन्तन अधिक प्रशस्त चित्त में, करते अभयकुमार ।
नहीं राज्य का लोभ सताता, गिने पांच नवकार ।२६७।
भाई के उठने से पहले, मृत्यु निश्चय सार ।
मणि कैसे दूं भाईजी को, सोचूं नया प्रकार ।२६८।
इन्हें जगाना उचित नही है, आये मोह विकार ।
चादर के कोने में बाधु लिखूं पत्र हितकार ।२६६।
जाग पर वे रुके न वन में, मन हिम्मत धार ।
ऐसा शुभ चिन्तन करते है देखो अभयकुमार ।३००।
करूं शीघ्रता इसमें ही है हित मेरे जीवन का ।
जो नागिन आ जायेगी तो, काम न होगा मन का ।३०१।

संकेत और साहस :

तरु का पत्र लेखनी तरु की, तरु के रस की स्याही ।
लिखी पत्र में विगत बराबर, मानसिंह के तांई ।३०२।
वन में आप नहीं रहनाजी, यह मेरी अरदास ।
यदि में जी जाऊंगा तो फिर आ जाऊंगा पास ।३०३।

जो विष उतर गया मेरा तो, आया कहूंगा हाल ।
गति से जो कुछ होता महावलीश्वर काल ।३०४।
महामंत्र को कभी न भूले, रखना दृढ विश्वास ।
इसके द्वारा ही मिलता है, आत्मिक पुण्य प्रकाश ।३०५।
पत्र और मणि दोनों वांधे, भाईजी के पल्ले ।
ऊंचे आदर्शों को कैसे, समझे लोग निठल्ले ।३०६।
जीने का नृप वनने का भी मोह नहीं है मन में ।
भ्रातृ-प्रेम के आदर्शों को, वसा लिया जीवन में ।३०७।
सोने की तैयारी की है, गिने सात नवकार ।
चादर सहित ओढ अव, सोए पांव पसार ।३०८।
डरती नीद नही आती है, अभय जागता सोया ।
वोलो इतना कर इस नर ने, क्या पाया क्या खोया ।३०९।

कलियुगी भाई :

क्या कलियुग के भाई ऐसी उदारता दिखलाते ।
या भाई को जानवूझ कर उलटा पाठ पढ़ाते ।३१०।
भाई को अंधेरे मे रख, भाई माल छुपाते ।
जव करते है अलग उसे तव, अंगूठा वतलाते ।३११।
भाई भूखा सोये चाहे, भाई माल उड़ाते ।
अवसर आये जव घर पर तव भाई कौन बुलाते ।३१२।
भाई को मूरख वतलाते, भारो रोब जमाते ।
ऐसे भाई भाई के प्रति घृणा भाव फैलाते ।३१३।
मेरा धन खा गया आपका धन भी खा जायेगा ।
इसको यदि दे दिया कभी वह, वापिस नही आयेगा ।३१४।
सगपन भी जव आते उनमें अटका देते रोड़ा ।
कहते जितना फोड़ा भुगते है उतना ही थोड़ा ।३१५।

नागिन का रोष :

सांप नहीं जब पहुंचा घर पर, नागिन करे विचार ।
वन से लौटे क्यों न अभी तक, मम जीवन आधार ।३१६।
वन में जाऊं पता लगाऊं पाऊं मन विश्राम ।
मेरे लिए नागराज है सीता के ज्यों राम ।३१७।
आई भूमि-सूंघती तरु पर है कांटों का जाल ।
मरे पड़े हैं वहीं पास में नागराज बेहाल ।३१८।
सीमालोप कोप आने से, नागिन मन तड़फाई ।
जीवित क्या जा सकता है अरि, लूं मैं वैर बजाई ।३१९।
दुश्मन से बदला लेने की, आई नीति पुरानी ।
बदला लेना बहुत बुरा है कहते केवल ज्ञानी ।३२०
दुश्मन क्या समझेगा मैंने मारा था अहिराज ।
सात दिनों में राज मिले या मिले उसे यमराज ।३२१
रक्त रक्त से कब घुलता है यही यथारथ वानी ।
वैर वैर से कभी न मिटता, समझेगा बात सयानी ।३२२
क्रोधोदय बोधोदय दोनों, देखो भाव विरोधी ।
प्रेम नहीं बरसा सकता है, जो मन हो प्रतिशोधी ।३२३।
शत्रु खोज में निकली नागिन रौद्र ध्यान मन ध्याती ।
ध्यानो वाली बात अलग से, समझाने में आती ।३२४।

ध्यान प्रकरण :

लोक और परलोक बिगाड़े आर्त्त रौद्र दो ध्यान ।
ज्ञान करो, अज्ञान हरो मत, धरो कभी दुर्ध्यान ।३२५।
धर्म शुक्ल दो ध्यान ध्याइये, यही वीर फरमान ।
श्री स्थानांग सूत्र का वर्णन, सुनो खोलकर कान ।३२६।
दो से सुख दुख दो से मिलता, संशय करो न लेश ।
सुनते बीती क्या न पीढ़ियां, संतों का उपदेश ।३२७।

कथा भाग में सूत्र भाग की, शिक्षा ये हितकारी ।
अपने जीवन मे अपना ये, त्रे ज्ञानी नर–नारी ।३२८।

अभय को डंसी :

लताकुंज में नागिन पहुंची, देखा सोये दो नर ।
मानसिंह पर चढकर सूंघा, सूंघ फिर अपना स्वर ।३२९।
इसने मारा नहीं इसे क्यों डसूं निरर्थक भाई ।
सोया जहां अभयसिंह नागन वहीं चली अब आई ।३३०।
उसे सूंघकर अब सीने पर बैठी चढकर नागन ।
मान रही है अपने को वह, बहुत बड़ी सौभागन ।३३१।
यही शत्रु है मेरा, इसने नागराज को मारा ।
डसूं इसे जिससे मर जाए, सोया ही बेचारा ।३३२।
हृदय धड़कने लगा अभय का, मुझे डंसेगी नागिन ।
उससे पहले पहले ही में, महामत्र तो लूं गिन ।३३३।
अंगूठे के पास बैठकर, नागन अब डसती है ।
डसती डसती अपने मन में खिल खिलकर हंसती है ।३३४।
अब न जियेगा जल न पियेगा, करनी का फल पाले ।
बुलवाले झाडे वाले को चाहे विष चुसवाले ।३३५।
अभयसिंह के तन में होती पीड़ा तीव्रा अपार ।
फिर भी मन-मन में गिनता है महामत्र नवकार ।३३६।
तेजी से तन मे फैला है, विष का उग्र प्रभाव ।
हर द्रव्यों में अपना अपना होता क्या न स्वभाव ।३३७।
संज्ञाहीन शरीर हो गया मानो निद्रा आई ।
आने का अवसर अब पाया आई बिना बुलाई ।३३८।
नागिन अपने स्थान गई है, करके अपना काम ।
अब जो कुछ भी आये चाहे, श्रेष्ठ नेष्ठ परिणाम ।३३९।

करने से पहले सोचो बस नीतिज्ञों का कहना ।
मानव–धर्म निभाने के हित-नितप्रति तत्पर रहना ।३४०।

मानसिंहजी जगे :

ब्राह्ममूहुर्त हुआ उठ बैठे मानसिंह तत्काल ।
पद्मासन धर चिन्तन करते आत्मिक ज्ञान विशाल ।३४१।
मन चिन्तन में टिक न सका हो मिला न इसका राज़ ।
अशुभ कल्पना आती मन में मानसिंह के आज ।३४२।
मन की अस्थिरता से ऊबे, उठे स्वयं तत्कार ।
शारीरिक चिन्ता से निपटे, देखे दृश्य उदार ।३४३।
दृश्य प्रभात समय का सुन्दर, मनमोहक सुखकार ।
सूर्योदय से पूर्व दिशा की, शोभा बढ़ी अपार ।३४४।
वन की सुषमा अवलोकन से मन में शान्ति उपजती ।
प्रकृति स्त्री निशि शय्या से उठ नये ढंग से सजती ।३४५।

जगाने लगे :

अभयसिंह के पास में अब वे आते उसे जगाने ।
आलस निद्रा को दे धक्का, मानो लगे भगाने ।३४६।
भैया जागो आलस त्यागो, सूर्योदय हो आया ।
उठो न, अब तक कैसे सोये, मैं न समझने पाया ।३४७।
जगकर पहले, मुझे जगाते यही कार्यक्रम नितका ।
पूर्ण ध्यान था अपना मेरा हित का और अहित का ।३४८।
करो न देरी चलना आगे हो जावो तैयार ।
सुबह सुबह ही चलना अच्छा, कहता है संसार ।३४९।
तेज धूप मे चला न जाये, इच्छा के अनुसार ।
नित्य कर्म करलो उठ करके, आलस दूर निवार ।३५०।
भाई के प्रश्नों का उत्तर, कौन बोलकर दे जी ।
पिंचर साइकिल हो जाने पर, हवा कौन भर दे जी ।३५१।

सोये अभयसिह आनन्द से, लम्बी चादर तान ।
मानसिह की इन बातो पर, कौन लगाये ध्यान ।३५२।
ज्येष्ठ वंधु ने सोचा ऐसे, थका बहुत है सार ।
लेकिन आगे भी जाना है जागृत करूं इस बार ।३५३।
हाथ हिलाकर लगे जगाने, मधुर वचन के साथ ।
अभय उठोजी, अभय उठोजी, धोलो मुंह अरु हाथ ।३५४।
क्या कुछ तन मे पीड़ा उपजी, मन मे उपजा रोष ।
आधिक भौतिक दैहिक येही, माने गये त्रिदोष ।३५५।
चादर दूर हटाकर कर से, देखा देकर ध्यान ।
माना इसके तन मन्दिर से, निकल चुके है प्रान ।३५६।
नाड़ी देखी लेकिन उसमे, मिला नही कुछ सार ।
रंग अग का नीला छाम है, बदल गया आकार ।३५७।
भाई की इस स्थिति से, भाई मानसिह घबड़ाया ।
मुख से निकली चीख जोर से, मानो चक्कर आया ।३५८।
मूर्च्छित होकर गिरा वही पर, भ्रातृ शोक का ताप ।
पड़ता क्या न मानना इससे, पुण्य और है पाप ।३५९।

रोदन पर रोदन :

राजमहल होता तो होती दोनो की सभाल ।
यहा कौन पूछे आकर के जीवन का क्या हाल ।३६०।
सज्जन मन सम पवन आ गया करने सेवा सार ।
परोपकारी पुरुषो से ही, हो सकता उपकार ।
मूर्च्छा हटने पर चेतनता, आई वापिस लौट ।
गिरे हुए भी मिल जाते है जैसे वापिस नोट
खोने लगे वीरता सारी, सके न स्थिति संभार ।
होने लगे अधीर जोर से, रोने लगे निव
छोड़ गये क्यों मुझे अकेले, घोर अरंड मझार ।

तोड़ गये क्यों इतने दिन का पाला पौसा प्यार ।३६४।
लड़े न झगड़े कभी परस्पर, कभी नही हम रूठे ।
जो भाई लड़ने लग जाते है वे भाई झूठे ।३६५।
जाना था तो कहकर जाते चले गये चुपचाप ।
उदय आ गया आज कहा से, पूर्व जन्म कृत पाप ।३६६।
टूटी बांह छोह किसी लूं किससे स्नेह बनाऊं ।
जीऊं किसके लिए जगत मे यहीं साथ मर जाऊं ।३६७।

चिंतनीय विषय :

मोहनी के प्रलोदय से, दशा यही होती है ।
बंधी हुई ममता के द्वारा, यह दुनिया रोती है ।३६८।
रोदन से उद्बोधन सारा दिया गया है व्यर्थ ।
संशोधन यह करता जिसकी, आत्मा अधिक समर्थ ।३६९।
मोहकर्म फिर बंध जाता है, अधिक रुपन के द्वारा ।
बनती मंद रसों वाली भी, तीव्र रसों की धारा ।३७०।
अल्पकाल से दीर्घकाल की स्थिति बंधती रोने से ।
शिथिल बंध भी कब रुक पाता, दृढ़ बंधन होने से ।३७१।
अधिक वेदना पाने का यह, रुदन हेतु बन जाता ।
जिन वाणी के सिवा तत्व यह जग में कौन सुनाता ।३७२।
रो रो कर थक गये सोचते, क्या होगा रोने से ।
रोने से क्या भाई मेरा मिल सकता रोने से ।३७३।

पत्र मिला :

दृष्टि पड़ी चादर के कोने किसने गांठ लगाई ।
खोलू देखूं इसमें क्या कुछ माया गई छुपाई ।३७४।
खोली गांठ पत्र पाया है—भाई के हस्ताक्षर ।
हस्ताक्षर ही बतलाते है अन्तर में क्या अन्तर ।३७५।

अहि डसने से मरा हुआ है, आप मुझे पावोगे ।
लेकिन मेरे शव को भैया, नहीं जला जावोगे ।३७६।
शव को यहीं छोड़कर वन से, हो जाना तुम पार ।
आयु शेष जो होगी तो मैं, जीऊंगा 'सुखकार ' ।३७७।
तीन दिनों के बाद शीघ्र में पाऊंगा आराम ।
कहीं कभी फिर अपन मिलेंगे लिखता अभय प्रणाम ।३७८।
लिखा नही कुछ घटना का क्रम उस मरण के बारे में ।
गोपनीयता कितनी थी जी उस क्षत्रिय प्यारे मे ।३७९।
मानसिह ने मान दिया है भाई के लिखने को ।
अब क्षण भर भी नही चाहता इस वन मे टिकने को ।३८०।
बडा दूरदर्शी था भाई, उसे अगम कुछ सूझा ।
अगम सूझ वालों की होती, जगमे पग पग पूजा ।३८१।
छोटा था पर बुद्धिमान था इसमे क्या सदेह ।
अल्प समय तक बरसे चाहे बरसे अच्छा मेह ।३८२।

मानसिह का उदय :

भाई का शव छोड़ वही पर चला मानसिह आगे ।
नीति सूत्र का कथन सही है, आत्मार्थ सब त्यागे ।३८३।
मुड मुड़कर के निज भ्राता को, देखे नयन पसार ।
आगे पीछे कदम बढाता, हृदयवेदना धार ।३८४।
आगे बढता जाता फिर भी मन में नही संतोष ।
देखे कही आगया है क्या भाई को कुछ होश ।३८५।
आगे बढ़ते जाते कुंवरजी, घोर विपिन के माय ।
नदिया पर्वत नाले खाले, सभी लाघते जाय ।३८६।
वन से वन गिरि से गिरी सरिता, सरिता को भी छोड़ा ।
थक जाने पर भी न लिया है, कही विश्रामा थोड़ा ।३८७।

स्मरण अभय का जब भी होता, होता कष्ट अपार ।
फिर भी मन में धीरज धरके, बढ़ता गया कुमार ।३
दिन से रात रात से फिर दिन,उपरी उपरी बीते ।
चर वे चर वे करने वाला, कभी न हारे, जीते ।३

वन में शयन :

छह दिन पूरे हो जाने पर, विजयनगर चल आया ।
थक जाने पर उपवन में बस, डेरा तुरन्त लगाया ।३८
मन है शांत क्लात तन सारा, वचन नही विभ्रात ।
महामन्त्र नवकार स्मरण की, श्रद्धा जगी नितान्त ।३८
भाई ने भी लिखा पत्र में गिननाजी नवकार ।
वन में मुनिजी ने फरमाया, यही एक आधार ।३८
भूला भावी भूत कालकी, स्मृतियां नही सताती ।
वर्तमान में महामन्त्र की, ध्वन जीवन सरसाती ।३८
अपने को भी भूला, भूला—अभय भाई को ।
हीरा पाने वाला भूले, क्या न नई पाई को ।३८

सिहासन खाली :

विजयसेन नृप मरे अचानक, पुत्र न कोई लार ।
बिना पुत्र के कौन संभाले, सिहासन का भार ।३९
सचिव और सरदार सोचते हम करले अधिकार ।
सूनी गुफा देखकर सिंहकी, घुसते क्यों न सियार ।३९
लड़ने लगे परस्पर सारे, भाई और उमराव ।
थोड़ा बहुत सभी का होता, निज क्षेत्रीय प्रभाव ।३९
लालच की लत बहुत बुरी मन, छोड़ सके तो छोड़ ।
तृष्णा छोड़ कपिल मुनिवर ने, दिए कर्म सब तोड़ ।३९

नगर सेठ आखिर में बोला, सुन लो मेरी बात ।
हथिनी को सिरणगारा जाए दे दो माला हाथ ।३६६।
समयोचित लख सबने मानी नगर सेठ की बात ।
नगर सेठ की बौद्धिक क्षमता, दे गई सबको मात ।४००।
जन मन से आनन्द मनाते, करते स्वागत सार ।
अपने भाग्य की करें प्रशंसा, नगर सेठ के लार ।४०१।

घड़ी मुहरत वेला पल शुभ, पण्डित करे उच्चार ।
गन्ध हस्तिन को करे रवाना, इसी समय मंझार ।४०२।
आगे आगे हथिनी, जनता पीछे पीछे चलती ।
सौत्सुकता से देख रहे सब, किसकी किस्मत खुलती ।४०३।
गलियां घूम चुकी पुरवाली, घूम चुकी बाजार ।
नहीं कही पर रुकी झुकी वह, करने को स्वीकार ।४०४।
निकली पुर से बाहर आखिर, उपवन में चल आई ।
जहां मानसिंह सोया, उसकी किस्मत गई जगाई ।४०५।
सुना न जबरन चुना इसी को पहनाई है माला ।
सिर पर कर अभिशेक कलश से, अभिमंत्रित जल डाला ।४०६।
सूंड मारमे उठा प्रार्थना करती चढो पधारो ।
राजा बनो आप इस पुर के, विनयभाव स्वीकारो ।४०७।
प्रजाजनों में मिलकर उनको, चढा दिया उस बार ।
दशों दिशायें गूंज उठी है, सुनकर जयजयकार ।४०८।
राजपथों पर घुमा ले गये, राजभवन मंझार ।
मन्त्री मण्डल के द्वारा अब, किया गया सत्कार ।४०९।
पुरोहितो ने विधिपूर्वक अब किया राज्य अभिषेक ।
नगर सेठ की हुई प्रशंसा रखी जिन्होंनें टेक ।४१०।

मानसिंह का मन :

मानसिंहजी सोचे मन में, कैसे बना यह काज ।
इस मणि के द्वारा ही मुझको मिला आज यह राज ।४११।
मानसिंह के जीवन का यह मानो नया प्रभात ।
पुण्यवानी ने जोर लगाया, तत्व यही साक्षात ।४१२।
शुभ कर्मों का वेदन श्रमतर, मिलता जगत मंझार ।
अशुभ देवता अशुभोदय से, यही धर्म का सार ।४१३।
मणिदर्शन से अभयसिंहजी की, याद रही है ख्याल ।
जिसने जीवन मोह हटाकर, लिया सकट में डाल ।४१४।
अभयसिंह जो चाहता मन में, मणि प्राप्त पश्चात ।
अमूल्य निधि को पाकर चलता, उस क्षण रातोरात ।४१५।
स्वयं राज्य को पाकर सुख से, रह सकता उस बार ।
किन्तु धन्य है उस भ्राता को, ली-मन ममता मार ।४१६
पुण्यवान है मान अभय सा, भ्रात मिला सुलकार ।
हाय अभय की हालत है क्या ? अटवी के मंझार ।४१७।
सम्भव है जी गया वहां वह, खोज करूं इस बार ।
जो नर अभय का पता लगाये, पावे धन अनपार ।४१८।

खोज और निराशा :

नरवर का आदेश लिए चर, घूम रहे है वन-वन में ।
अभयसिंह शोधन को धुन, मन, कहता पावे धन-धन ।४१९।
जो भी मिले उसे वे पूछे क्या ऐसा नर देखा ।
उसे ढूंढ़ने का हम सबने, लिया मान लो ठेका ।४२०।
अंग रंग यह ऊंचाई केश वेश है ऐसा ।
कर पद कोमल बलधारी का, पड़ा कहीं अदेशा ।४२१।
कहीं मिला हो, कहीं सुना हो, कहीं नजर हो आया ।
हमें बताओ हम बोलेंगे इनने हमें बताया ।४२२।

छोड़े नहीं पहाड़, झलाड़ तल, आड़ न गिरी की छोडी ।
छोड़ा वन उपवन न भवन जन, जहां जहां मति दौड़ी ।४२३।
किन्तु कहीं पर पता नहीं जब लगा सके चर प्यारे ।
वापिस आकर हाल सुनाये, खोज खोज हम हारे ।४२४।
विवश बना राजा बेचारा, राज पालता अपना ।
देख रहा है अभय मिलन का, मन से मीठा सपना ।४२५।
न्यायनीति से राज चलाता, पाता सुयश विशेष ।
कठिन न्याय पर चलना, देना सरल न्याय उपदेश ।४२६।
स्थान सुयश को मिला न भूपर फैल गया आकाश ।
एक साथ में क्या न फैलता, जैसे सूर्य प्रकाश ।४२७।
मानसिंह की आन-वान पर, शान राज्य ने पाई ।
पिछले राजाओं की शोभा, मानो हुई सवाई ।४२८।

अभय की ओर :

हाल अभय का सुनने को अब, श्रोता मन उत्सुक है ।
चलता हुआ पथिक मिलने को, जाया करते रुक है ।४२९।
विष से हो बेहोश अभयजी पडे हुए है वन में ।
कब कैसा संकट आ जाये पता न बस जीवन मे ।४३०।
वही परिस्थिति बनी हुई है तीन दिनो तक सार ।
पशुओं और पक्षियों ने भी, किया नही है बिगाड़ ।४३१।
रक्षित वही धर्म से होता, जिसने धर्म रखा हो ।
मधुर स्वाद वह बतला सकता, जिसने स्वय चखा हो ।४३२।
नमते देवी ओर देवता, मिट जाते सन्ताप ।
'धम्पो मंगल मुक्किण्ठे' का, देखो अमिट प्रताप ।४३३।
बेहोशी में सुख का दु.ख का, अनुभव कभी न होता ।
अनुभव जब होता तब मानव; हंसता अथवा रोता ।४३४।

आयुकर्म अवशेष अभी है, तब कैसे मर जाये ।
पवन न हो अनुकूल तरी फिर क्या सागर तर जाये ।४३५।

मदनमंजरी का मन :

चौथे दिन उस वन में आया, एक वड़ा सथवाड़ा ।
देख स्थान सुन्दर रहने का, झण्डा उसने गाड़ा ।४३६।
सार्थवाह की सुता और स्त्री, साथ सकल परिवार ।
जाया आया करता था वह करने को व्यापार ।४३७।
दास दासियां नौकर चाकर साथ मुनीम अनेक ।
वैलगाड़ियां घोड़े हाथी रथ, रक्षक सुविवेक ।४३८।
मदन मजरी नाम सुता का, रूप कला सम्पन्न ।
खुसबू फूलों वाली कैसे, रह सकती प्रच्छन्न ।४३९।
यौवन रूप छिपाने से क्या छिप सके है तन में ।
भाव छिपाए जा सकते है, भले वुरे जो मन में ।४४०।
लगे व्यवस्था में जन सारे, पाकर के आदेश ।
जिसने जो ली जिम्मेवारी, उसका ध्यान विशेष ।४४१।
गए सरोवर पर जब नौकर, निर्मल जल लाने को ।
शिला लेख पढ भरा नहीं जल, विवश बने आनै को ।४४२।
और कहीं से जल लाकर के, सुन्दर किया प्रबन्ध ।
सावधानता ही देती है जीवन का आनन्द ।४४३।
लगे नहानै धोनै कोई, करते है विश्राम ।
खानै और पकानै का भी, बहुत बड़ा है काम ।४४४।
मदनमंजरी ले मां-आज्ञा, ले दासी को साथ ।
वन में चली घूमनै को यह, मन इच्छा की बात ।४४५।
पहुच गई वह वही घूमती, जहां था राजकुमार ।
देख अतुल सौन्दर्य देह का, करने लगी विचार ।४४६।

यह तेजस्वी पुरुष सविष वन, क्यो सोया वनमाय ।
चन्दा जैसा मुखडा इसका, देखके आनन्द पाय ।४४७।
इसके दर्शन से मेरे मन, उमड़े हर्ष अपार ।
मेरे पूर्वजन्म का कोई होगा स्नेही सार ।४४८।
पूर्वजन्म के सस्कारों से बनते है कुछ काम ।
आत्मतत्व की सत्ता से ही बनते है सब काम ।४४९।
अनजाने ही प्रेम उमड़ता, डाह ईर्ष्या तत्काल ।
पूर्वजन्म का है यह कारण, नही नियति नही काल ।४५०।
स्नेह जगेगा स्नेही जन से, द्वेषी जन से द्वेष ।
साधारण सी बात नही यह समझो बात विशेष ।४५१।
खड़ी रही कुछ देर सोचती, बैठ गई फिर पास ।
यह जीवित हो जाए, ऐसी लगी लगाने आश ।४५२।
अभय न सुनता और बोलता, बना हुआ बेहोश ।
उत्तर बिना मिले प्रष्टा को, कैसे हो सन्तोष ।४५३।
वृद्धा दासी बोली बेटी, यह तो मरा पड़ा है ।
चाहे तेरे पूर्वजन्म का प्रेम बड़ा उमड़ा है ।४५४।
ऐसे अशुभ वचन मत बोलो, है यह मुझको प्यारा ।
अभी जगेगा बोल उठेगा, बरसेगी रसधारा ।४५५।
दासी बोली नाहक रुक कर, समय न खोवो व्यर्थ ।
वही बोलना अच्छा लगता, जिसका हो कुछ अर्थ ।४५६।
बाट देखते होगे अपनी मात-पिता दिन सारे ।
ऐसा कही नही हो जाए वे हमको फटकारे ।४५७।
कहा गई थी कहा रुकी थी, क्यो यह देर लगाई ।
क्या करती थी सत्य बतादे, क्यों देरी से आई ।४५८।
नही जाना नही खाना मुझको, सुन लो कान लगाय ।
जाना हो तो जा सकती हो, आज्ञा देती सुनाय ।४५९।

परिवार की चिन्ता :

इतने मे आ पहुचा सारा, मात–पिता–परिवार ।
शव के पास सुता को पाया, आया इचरज सार ।४६०।
बेटी यहा कहां पर बैठी, उठो चलो इस बार ।
भोजन करना आगे चलना, होना है तैयार ।४६१।
वन में रात बिताना ही है, अहितकार अनपार ।
समझदार हो बहुत सयानी, कर लो स्वयं विचार ।४६२।
मुझे न खाना मुझे न जाना, सुन लो मेरी बात ।
विषमावस्था मे इस नर को, कैसे छोड़ूं मात ।४६३।
ऐसे नर तो बहुत मिलेगे इस अरवी मंझार ।
किन-किन के पीछे बैठोगी, समझ न पड़ती सार ।४६४।
कई देर तक उसे समझाते, मात–पिता–परिवार ।
कुछ भी हो मैं तो नही चलती, कहे सुता हठ धार ।४६५।
सुनकर क्रोधित बने पिताजी, बोले कर्कश बात ।
बड़ी मूर्ख हो हठ क्यों करती, समझावे तेरी मात ।४६६।
नहीं आवो तो रहो यही पर, इस मुर्दे के पास ।
यही जीवित हो जाए तब तू, पूरी करना आश ।४६७।
करना ब्याह इसी से अपना, भोगना सुख संसार ।
हम तो यहां से चल देते है, सोचो करो विचार ।४६८।
मदनमंजरी विनयभाव से करती है उच्चार ।
ननु नच बिना आपकी आज्ञा, है मुझको स्वीकार ।४६९।
श्रेष्ठ पुरुष जी जाएगा तो, पूरूगी मन आश ।
वरना इनके साथ जलूगी, इसीलिए रहूं पास ।४७०।
इसे छोड़कर अन्य पुरुष है, मेरे भ्रात समान ।
आप चले जाओ सुखपूर्वक, विनय लीजिए मान ।४७१।

मदनमंजरी का सुन निर्णय, चकित बना परिवार ।
सोचा सबने यह न मानती जन्मान्तर सस्कार ।४७२।
कभी न देखा इसको, इसके कभी न खेली साथ ।
कभी न इससे मिली अकेली, कभी नही की बात ।४७३।
इसके मात-पिता से भी यह, परिचित नही लियार ।
जाने सुने कभी भी इसके, इसने नहीं विचार ।४७४।
फिर भी इसके पीछे कुंवरी, मरने को तैयार ।
इसको ही तो हम कहते है, जन्मान्तर संस्कार ।४७५।
हमको क्या करना है अब यह, प्रश्न बड़ा दुश्वार ।
अगरग बतलाता विष ने, किया पूर्ण अधिकार ।४७६।
कोई जहर उतारे इसका, तब हो शान्ति विशेष ।
कौन व्यक्ति मिल सके यहा पर, परिचित नही प्रदेश ।४७७।
रात यहा पर रुक न सकेंगे, शिलालेख अनुसार ।
शव के पास सुता को छोड़े, लेकर क्या आधार ।४७८।
सार्थवाह ने अपने दल से, बात कही विस्तार ।
कोई जहर उतारो पावो, इच्छित द्रव्य अपार ।४७९।
धन दौलत का लोभ न हमको, करते है हम काम ।
किए प्रयत्न सभी ने लेकिन, मिला नही आराम ।४८०।
चिता रचाई गई अन्त मे अग्नि जलाई सार ।
मदनमंजरी करे तैयारी, आत्मसमर्पण सार ।४८१।
माता-पिता करे आक्रन्दन, मन है अधिक उदास ।
सकल समाज बना है विह्वल, खड़ा चिता के पास ।४८२।
हृदय-विदारक दृश्य देखकर करे सभी अफशोस ।
कइयों के मन इस लीला पर, छाया है अति रोष ।४८३।

कुंवर जी गया :

इतने में इक योगी आया, पूर्व दिशा से सार ।
ठहरो-ठहरो क्या करते हो, सुनो बात इस वार ।४८४।

योगी से कर दिया निवेदन, घटना का सब हाल ।
सेठ वचन सुन योगी बोला, धरिये धैर्य विशाल ।४८५।
इसका जहर उतारूंगा मैं निश्चय लेवो धार ।
शव के पास जमाया आसन, योगी ने उस बार ।४८६।
गुटिका एक निकाली खोली योगी ने निज झोली ।
झोली में ही सब कुछ रहता, झोली बड़ी अमोली ।४८७।
गोली को जल के सह घिसकर, लेप किया तैयार ।
पांव अगूठे पर है लगावे, योगी उसे त्रिवार ।४८८।
रस का असर हुआ है तत्क्षण जहर हटा है तनका ।
मदनमंजरी के प्रण का या जोर लगा जीवन का ।४८९।
सावन की घनघटा हटाकर, जैसे सूर्य निकलता ।
अभयसिंह ने जी जाने में पाई बड़ी सफलता ।४९०।
आलस तजकर उठ बैठे है अभयसिंह सुकुमार ।
सार्थवाह के दल में देखो, आनन्द का नहीं पार ।४९१।
मदनमजरी के आनन्द का, वर्णन किया न जाय ।
नेत्र नहीं उठ पाते दर्शन को, करके थकी उपाय ।४९२।
आखिर नैन नैन से मिलकर,अपनी प्यास बुझाते ।
नैन नैन से मिलने में भी, बहुधा क्या न लजाते ।४९३।
मन से मन को मिलने में क्या आया करती लाज ।
गोपनीयता मन की कैसे, समझे कहो समाज ।४९४।

योगी की प्रशंसा :

योगी के पांवों में गिरकर, मान रहे उपकार ।
सेठ और सेठानी के सह, खड़ा हुआ परिवार ।४९५।
बार बार अभिनन्दन करते, योगी का उसवार ।
कैसे भूला जाए बोलो, किया गया उपकार ।४९६।

विरले नर होते है ऐसे जो करते उपकार।
दुष्टों से तो भरा पड़ा है कलयुग का संसार ।४९७।
मरा हुआ ही था यह वन में अभी जलाते इसको ।
पता नहीं था हमे उतारा जायेगा इस विष को ।४९८।
जिसे पता होता है वो ही, कहलाता है ज्ञानी ।
बिना पते की बात सोचता कहता नर अज्ञानी ।४९९।

वेवाह और विरह :

सार्थवाह ने योगी से अब, सारी बात सुनादी ।
पूछा क्या इन दोनों की बस, कर दी जाये शादी ।५००।
कन्या का प्रण प्राणार्पण से, तुलने को तैयार ।
तब शादी करनी ही होगी कौन करे इन्कार ।५०१।
अभयसिंह से हाथ जोड़कर व्याह मनाया मन से ।
आभारी था इन सबका प्राप्त नये जीवन से ।५०२।
मदनमजरी और अभय का, पाणिग्रहण करवाया ।
जिसको जैसा आया वैसा, गोत मांगलिक गाया ।५०३।
जीने की आशा न जहां थी, हुआ विवाह वहां पर ।
मानव की मति और कल्पना, पहुंचे कहां कहा पर ।५०४।
निशा समय सन्निकट जानकर, सार्थवाह उस वार ।
चलो हमे आगे चलना है करता है उच्चार ।५०५।
चलो आप भी साथ हमारे विनती करो स्वीकार ।
जामाता पर सास ससुर का होता है अधिकार ।५०६।
कहा अभय ने अभी आपके आ न सकूंगा साथ ।
अन्य दिशा मे जाना मुझ को सुनो शान्ति से बात ।५०७।
पता ले लिया सार्थवाह का, अभय अधिक हुशियार ।
मदनमंजरी के सम्मुख अब, रखता स्पष्ट विचार ।५०८।

वह बोली मैं साथ आपके, आऊंगी हे नाथ ।
जल से बिछुड़ी मीन जियेगी, हुई न होगी बात ।५०९।
समय देखकर चलने वाला, सुख पाता संसार ।
साथ अलग रहने में क्या है, कर लो स्वयं विचार ।५१०
पति की आज्ञा पाला करती पतिव्रतायें मन से ।
नारी ने जब किया समर्पण निजजीवन जिस दिन से ।५११
मदनमंजरी मान गई है पति के समझाने से ।
पति को कष्ट नहीं होगा, क्या साथ अभी जाने से ।५१२
विरह सहूंगी अलग रहूंगी, धर्म वहुंगी कुल का ।
विरहिणियों के मुख पर देखा नही किसी ने मुलका ।५१३
पति के चरणों में झुक करके, गई तात के साथ ।
अभयसिंह ने जो समझाई, समझ गई वह बात ।५१४
अभायसिंह ने सार्थवाह को विदा किया उस वन से ।
विनयी वल्लभ बन जाते हैं, मधुर वचन प्रण मन से ।५१५

अभय की स्थिति :

अभय अकेला अब इस वन से, चल पड़ता तत्काल ।
मन की मकड़ी बुनने बैठी, जाल नये जंजाल ।५१६
भ्रातृमिलन की आशा मन में, भरती मोद विशेष ।
मोद भरा करते ज्यों उमन में मधुर-मधुर उपदेश ।५१७।
बीत चुकी जो भी घटनाये उनकी आती याद ।
मदनमंजरी की यादों ने छेड़ा नया जिहाद ।५१८।
रात्रि समय की घटनाओं पर आते नये विचार ।
लक्ष्मो काली खड़ी दीखती लिए नये आकार ।५१९।
राक्षस और नाग-नागिन की, बातें आती मन में ।
सार्थवाह योगी की उपकृति आती स्मृति जीवन में ।५२०।

विचारोर्म्मियां उदधि उर्म्मियां, उठती मिटती जाती ।
मन सागर में एक वार तो, उथल-पुथल सी आती ।५२१।
जव थक जाता तव रुक जाता, ले आता विश्राम ।
सिवा एक चलने रुकने के, नही हाथ मे काम ।५२२।
नदिया पर्वत नाले खाले, होते रहते पार ।
इधर देखना उधर भूलना, लाना नही विकार ।५२३।
सोच रहा मन मानसिंह ने, पाया होगा राज ।
भाई के मस्तक पर होगा हीरों वाला ताज ।५२४।
जो भी राही मिले उसी से जाना करता हाल ।
खव्र नहीं पाई भाई की, दुनिया बड़ी विशाल ।५२५।
आप कहां से आये ? जाते—आगे और कहा पर ।
राज्य कौन से राजाजी का चलता कहो यहा पर ।५२६।

पता लग गया :

किसी धर्मशाला में ठहरे, आकर सायंकाल ।
वातें करने लोग वहां पर, मन की भाप निकाल ।५२७।
सुनी नही क्या ? सुनो सुनाये एक नई सी बात ।
मानसिंहजी विजयनगर के है तेजस्वी नाथ ।५२८।
अभी अभी छह माह हुए है राज्य नया ही पाया ।
पाया हार्दिक प्रेम प्रजा का, छाया सुयश सवाया ।५२९।
कान लगाया अभयसिंह ने, पता वन्धु का पाया ।
भ्रमण-सिन्ध का मानो अव तो, यहां किनारा आया ।५३०।
मेरे ही भाई राजा है, मानसिंह महाराज ।
मणि से राज्य मिला है इनको, पता लगा है आज ।५३१।
विजयनगर जाना है मुझको, मिलने को भाई से ।
आता नहीं मेरू उठ करके, मिलने को राई से ।५३२।

भारी संकट :

उठा अभय अब विजयनगर के, रास्ते पर चल निकला ।
राजा होते तो चर आकर, पथ भी देते दिखला ।५३३।
विजयनगर में पास पहुंचकर, लिया जरा विश्राम ।
रवि कवि भी चलकर आखिर करते है आराम ।५३४।
विजयनगर पर भय के वादल, बहुत जोर तब छाये ।
पता नहीं दुश्मन चढ़कर के, कहीं अचानक आये ।५३५।
संध्या होने से पहले ही द्वार बन्द हो जाते ।
सोने के टाइम से पहले नर–नारी सो जाते ।५३६।
इधर अभग आ रहा शहर के, द्वार हो रहे बन्द ।
अभय प्रवेश नहीं कर पाया, आया नूतन द्वन्द ।
द्वारपाल ने देख लिया पर, घुसने नहीं दिया है ।५३७।
धक्का देकर बाहर करके, बन्द कर लिया द्वार ।
अभय अकेला और विदेशी, बना बहुत लाचार ।५३६।
दरवाजे के पास देर तक, खड़ा रहा अड़कर के ।
नहीं प्रवेश लिया जा सकता, अड़कर के लड़कर के ।५४०।
बड़ी उमंगों से आये थे, चलकर इतनी दूर ।
मन की मन में रही बात सब, आया दुख भरपूर ।५४१।
अभी मिलन का योग नही यह अन्तराय आई है ।
मन सन्तोष धारने की निधि, विधियुत बतलाई है ।५४२।
समय रात का कहीं विताऊं सोऊं जा उपवन में ।
इसे पता क्या संगट भारी, आयेगा जीवन में ।५४३।
शयन उभय ने किया शांति से, देख बड़ी उद्यान ।
उद्यानों की सुषमा ही है, पुर–काया के प्रान ।५४४।
आभूषण थे वड़े कीमती जो श्वसुर से पाये ।
कुछ सो नेये समय समय पर अड़ा काम निपटाये ।५४५।

द्वारपाल ने पता लगाया, सोया यहां मुसाफिर ।
बदमाशों को ले आया है, इसे लूटने खातिर ।५४६।
लूटा माल लाठिया मारी, कपड़े लिये उतार ।
उठा गिराया है गड्ढे में, मानो डाला मार ।५४७।
जोर अकेले का क्या चलता, ये सजधज कर आये ।
अगर सामने हो भी जाये, तो निज प्रान गवाये ।५४८।
भाग गये बदमाश चोर वे लेकर माल पराया ।
इन लोगों ने नही आजतक, पैसा एक कमाया ।५४९।
अभय पडा बेहोश दोप है क्या न अशुभ कर्मो का ।
कर्मो आगे पता न चलता बड़ी बड़ी फर्मो का ।५५०।
नहीं चोट मे खोट जरा भी, बची नही लगोट ।
होश बिना मन महामन्त्र की ले सकता क्या ओट ।५५१।
मिट्टी के मन दया आ गई किया दवा का काम ।
शीतल बना पवन निज मन से, देने को आराम ।५५२।
दिया रात ने साथ स्वय को, चेतन हो पहचाना ।
पीडा से पीड़ित, इस तन से, मुश्किल है उठ पाना ।५५३।
पड़े पड़े ही सास-सास से, निकल रहा नवकार ।
अरिहन्ताणं सिद्धाणं का बहुत बड़ा आधार ।५५४।

एक विचित्र संयोग :

हुआ सवेरा मिट्टी लेने, आया एक कुमार ।
खदेड़े पर खडे करा दिये,गधे साथ जो चार ।५५५।
दी आवाज अभय ने भैया, लेना रे संभाल ।
उसने देखा पड़ा आदमी, बड़ा बुरा है हाल ।५५६।
कुंभकार ने दया भाव ला, बाहर उसे निकाला ।
पूछा, यह क्या ? हुआ, यहां पर, किसने लाकर डाला ।५५७।

कहा अभय ने बदमाशों ने, लूटा-पीटा-मारा ।
बचने की आशा बच पाई, आयुकर्म के द्वारा ।५५८।
कुंभकार ने कहा सुनो अब, चलो, ले चलूं मै घर ।
सेवा करने का मिल जाये, मानवता को अवसर ।५५६ ।
चला नहीं जाता मेरे से, कहां चलूं मै कैसे ?
इन गदहों पर मै बिठलाऊं जो आज्ञा दो ऐसे ।५६०।
घर ले जाकर वैद्य बुलाघर, करवाऊं उपचार ।
शांति-प्रेम उपजाया करता, सेवा का संसार ।५६१।
गद्‌गद्‌ हुआ अभयसिंह का मन, धन्य कुमार ।
क्या मैं निरख रहा नयनों से, सेवा पुरुषाकार ।५६२।
डाल गुणी में कुंभकार घर, अभयसिंह को लाया ।
वैद्यराज को बुलवाकरके, इसे तुरन्त दिखलाया ।५६३।
दी औषधियां पथय दिये है, दिए गए अनुपान ।
सेवाये दी श्रद्धाभाव से, मान एक इन्सान ।५६४।

सेवा एक धर्म :

मोह नहीं है इस सेवा में, और नहीं पहचान ।
केवल सेवा भाव चमकता सेवा धर्म महान्‌ ।५६५।
गंघ स्वार्थ की यहां न आती, है केवल परमार्थ ।
सेवा का शुभ काम बड़ा है, कहने का भावार्थ ।५६६।
घर वालों की सेवा से भी घर वाले थक जाते ।
पता नही अपने मुख से वे, अंट-संट बक जाते ।।५६७।।
सेवा करके अगर गिनाया, तो सेवा बेकार ।
जो न गिनाये उसकी सेवा की जाये स्वीकार ।५६८।
कोई सुख देता दुनिया में, कोई दुःख देता है ।
अपने लिए किया जाता सब, किसका क्या लेता है ।५६९।

सम्यग् दृष्टि करे जो सेवा, निःस्वार्थभाव के साथ ।
कर्म निर्जरा वह करता है धर्म कहा जगनाथ ।५७०।
मिथ्यात्वी सेवा से पुण्य संचय करता सार ।
'सेवा धर्म परमगहन" है कहते नीति धार ।५७१।
अपनी जैसी मनोभावना , वैसा होता काम ।
दर्शक रख देते है देखो भले बुरे को नाम ।५७२।
अभय सिह ने कुंभकार का, माना अति उपकार ।
ज्यो-ज्यों स्वस्थ्य हो रहा त्यो-त्यों बढता हर्ष अपार ।५७३।
निश्चित ज्ञात हो गया, पुर का राजा मेरा भाई ।
फिर भी सोचा मिलने वाली वेला कभी न आई ।५७४।
आयेगा जब समय, भ्रातृ से मिलना हो जायेगा ।
अनजाना जीवन पथ अब तक मोड़ नया खायेगा ।५७५।
सोचा समझा जो होता तो मिलन उसी दिन होता ।
मिलने के दिन गड्ढे में गिर रहा रात भर रोता ।५७६।
मिलने की अपनी उत्सुकता, क्यो दिखाई जाये ।
पक जाने पर समय आम्र-फल, मीठा रस टपकाये ।५७७।
स्वस्थ हो रहा, मस्त हो रहा अभयसिह सुकुमार ।
कथा मोड़ लेती है देखो, सुनना बन हुशियार ।५७८।

नर बलि दो :

करियाणा से वाहन भर कर, करने को व्यापार ।
सेठ एक धनदत्त दिशावर, जाने को तैयार ।५७९।
जलधि मार्ग से जाने को वह खड़ा बड़ा व्यापारी ।
बाधा एक अचानक उपजी, तन में ज्यो बीमारी ।५८०।
वाहन एक न खिसके आगे, अटक पड़े है सारे ।
चला नही जा सकता तो क्या, वापिस माल उतारे ।५८१।

किसने रोक रखे ये वाहन, नहीं समझ में आता ।
किससे पूछा जाए बोलो, कोन मन्त्र विज्ञाता ।५८२।
नैमित्तक इक आया, बोला जलधि मांगता भोग ।
द्वात्रिंशल्लक्षणधारी नर, लावो करो प्रयोग ।५८३।

सभी उपाय किये :

सेठ सोच कर गया, नृपति को-दिया बड़ा उपकार ।
मै हूं इसी नगर का राजन् नामी । साहूकार ।५८४।
पुरुषरत्न दिलवाया जाये, बलि देने के खातिर ।
राजाज्ञा से एक बार तो, होता सब कुछ हाजिर ।५८५।
मन चाहा धन दे दूंगा मैं—नर देने वाले को ।
देना बहुत सुलभ बन जाता, जर लेने वाले को ।५८६।
निरपराध नर को देने में न्याय न आज्ञा देता ।
एतद्विषयक भेंट आपकी कभी नही मै लेता ।५८७।
ढीढोरा पिटवा दूं पुर में, अगर मिले नर ले लो ।
मै न बीच में पड़ सकता हूं निज किस्मत पर खेलो ।५८८
ढिंढोरा पिटवाया लेकिन, मिला नही नर कोई ।
कुंभकार के घर नर उत्तम, बोला नर विद्रोही ।५८९
सेठ गया लालच दिखलाया, फसा नहीं कुमार ।
लालच में फंसने वालों को लाख लाख धिक्कार ।५९०
मांनव रत्न, और परदेसी मेरा प्रिय महमान ।
जिसकी सेवा करके मैने, माना निज कल्याण ।५९१।
उसे आपको दे दूं, ले लूं मन चाया धन आज ।
आयेगी क्या नही बतावो, मानवता को लाज ।५९२।
सेठ पुलिस ले गया दुबारा, डर दिखलाया भारी ।
घबराया कुमार देखकर, घबराई कुंमारी ।५९३

डंडे पड़ते ही वह बोला,—वह बैठा सुकुमार ।
कुंवर सामने खड़ा हो गया, हाथ नहीं हथियार ।५६४।
पत्थर लेकर लगा मारने, पुलिस गए सब हार ।
सेठ सबल सोना ले आया, दे पैसा अनपार ।५६५।

नवकार का प्रभाव :

इधर कुंवर के पास न पत्थर, और नहीं हथियार ।
पकड़ा गया पुलिस के द्वारा, रोए खडा कुंमार ।५६६।
कैसे इसे बचाया जाये कोई नही उपाय ।
लातसिग क्या काम लेंगे जब, बंधी खडी हो जाय ।५६७।
पुलिस पकड़ ले गए, जहां पर बलि देनें का स्थान ।
कौन सहायक बने बतावो, सारा पुर अनजान ।५६८।
कुंभकार के सिवा न इसका, कोई न संगी साथी ।
मौत सामने खड़ी देख कर, धकधक करती छाती ।५६९।
मन ही मन से लगा सुमरने, महामन्त्र नवकार ।
जिसने जन्म लिया है उसको, मरना है इक बार ।६००।
मरने से क्या डरना जब वह आये तो आने दो ।
एक एक ही होता दाना, होंगे क्या दाने दो ।६०१।
जिन शासन सेवी देवी ने कहें कान में बोल ।
तुझे मार डाले ये ब्राह्मण यहा न ऐसी पोल ।६०२।
अभय ! न भय कर "धर्मे जय जय, पापे क्षय निश्चित है।
करने दे जो करे उसी मे, हित सम्पूर्ण निहित है ।६०३।
अभयसिह की अर्चा पूजा, विधि द्वारा करवाई ।
साहुकार से संकल्पी की, अजलियां भरवाई ।६०४।
मन्त्रोच्चारण की ध्वनियोमे फेका इसको जल मे ।
अभय मन्त्र स्मरता पाता है निज को फिर स्थल में ।६०५।

घबड़ाए विधिवेत्ता सारे और सेठ घबडाया ।
फेंका था सागर में इसको, यहां कहा से आया ।६०६।

सेठ के साथ :

पड़ा सेठ पैरों में, बोला क्षमा करो अपराध ।
आप समर्थ पुरुष हो प्यारे मत्र बड़े हैं याद ।६०७।
नावाओं के चलनें के हित, जपिए कोई जाप ।
खये जाता है अंतर से हमें हमारा पाप ।६०८।
कुंवर अभय चढ़कर नावा पर, लगा बोलने श्लोक ।
देवो ने स्वर साथ मिलाया, सुनते सारे लोक ।६०९

तदुक्तम् :

अम्भो निधो क्षुभित भीषण नक्र चक्र ।
पाठीन पीठ भयदोल्वण बाडवाग्ना ।
रंगतरंग शिखर स्थित यान पात्रा ।
स्त्रांस विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ।
हाथ जोड़ कर नयन मूंद कर तन-मन तल्लीन ।
करने लगा प्रार्थना प्यारी, लय के साथ नवीन ।।६१०।
पहले पद के उच्चारण से, नावाये कुछ डोली ।
होठों के हिलने से लगता निकलेगी अब बोली ।६११।
पूर्ण हुआ पद जहां दूसरा खिसके जरा जहाज ।
क्या न नवोढाओं को आती चलने में भी लाज ।६१२।
पाद तीसरे के कहते ही शुरु हो गया चलना ।
विनयी शिष्य बोलता गुरु से, अब न करूंगा स्खलना ।६१३।
चौथा पद पूरा होने से, आया गति में वेग ।
यथा बरसने लगता रिमझिम चढ़ा खड़ा जो मेघ ।६१४।
सेठ चकित द्विज चकित थकित सब आश्चर्यान्वित मन है ।

देखो यह न मानवी, कोई देवी सा जीवन है ।६१५।
इसे साथ लेने में अपना बहुत भला है भाई ।
इसने रुकी हुई नावायें, चढ़कर तुरन्त चलाई ।६१६।
आग्रह भरी विनती कर अपने, साथ अभय को लेते ।
सरल विनम्र स्वभावी बनकर, अभय साथ चल देते ।६१७।
चलो घूम आवूंगा मैं भी, उदधि-पार इसवार ।
देशाटन से आया करती, चतुराई श्रेयकार ।६१८।

सितारा चमक उठा :

अभय सेठ के साथ बात में, रात दिवस रत रहता ।
जो कुछ इच्छा होती वह सब, खुले हृदय से कहता ।६१९।
कल जिसकी बलि दी जाती है उसका अब सत्कार ।
क्योंकि अभय के पास बडा है महामन्त्र नवकार ।६२०।
शहर रत्नपुर पहुच गए है, बहुत दिनो के बाद ।
मानो मिलने को पहुंचाती एक मित्र की याद ।६२१।
रुका सेठ धनदत्त यही पर, रोके गए जहाज ।
क्या न शिकार देखकर रुकता, उडता—उडता बाज ।६२२।
अभयसिंह को साथ ले लिया, हुआ सेठ तैयार ।
राज सभा मे चलकर आया, लिए बडा उपकार ।६२३।
परिचय दिया विनय से नृप से, कहा प्रयोजन सारा ।
रखी भेट रत्नों की अनुपम, मधुर वचन के द्वारा ।६२४।
माफ करे कर अगर नरेश्वर किया जाय व्यापार ।
कर पर कर लगने से पडता व्यापारी पर भार ।६२५।
आप उदार हृदय है राजन । हम परदेशी लोग ।
पता नही कैसे मिल जाता, आने का सयोग ।६२६।
नृप ने कहा आप सुखपूर्वक, करें यहां व्यापार ।
कोई कर न लिया जायेगा, बरते नीति उदार ।६२७।

सेठ हुआ खुश-खुश सुन कर के, बोला जय जयकार ।
रहते साथ परिश्रम किस्मत समय और व्यवहार ।६२८।

स्वयंवर रचाया :

नृपति सुता श्री रत्नवती थी, बैठी नृप के पास ।
उसके तन अनन में करता यौवन क्रीड़ाभ्यास ।६२९।
रत्न सेन भूपति सचिवों से, परामर्श थे करते ।
यही योग्य है, यही योग्य है, मन्त्री हां हां करते ।६३०।
अभयसिंह भी साथ सेठ के, बैठा एक किनारे ।
रत्नवती ने उसको देखा, झुकी शर्म के मारे ।६३१।
अभयसिंह की सुन्दरता पर, मुग्ध बनी वह मन से ।
दृढ संकल्प किया है उसने, जीवन प्राणार्पण से ।६३२।
इसके सिवा अन्य नर मेरे भाई पिता समान ।
व्याह करूंगी तो इससे ही, वरना दूंगी प्राण ।६३३।
मन की बात कौन जाने जी, जब तक कहीं न जाती ।
तेल खतम हो जाने पर ही जल सकती है बाती ।६३४।
सचिवों को आदेश मिला है, वर की करो तलाश ।
कहने वाले कहते, बैठा वर कन्या-के पास ।६३५।
पुत्री बोली करो स्वयं-वर, ढूढूंगी वर अपना ।
मेरे लिये ढूंढने में वर क्यों तपना क्यों खपना ।६३६।
सुता अकेली और लाड़ली, मात-पिता का स्नेह ।
उसका कथन न टाला जाता, चाहे कंचनवरसे मेह ।६३७।
हुई स्वयंवर की तैयारी, आमन्त्रण भिजवाये ।
कौन किसी के घर जाता है बोलो विना बुलाये ।६३८।
आये बडें-बडे सौभागी, राजा राजकुमार ।
कन्या किसको नहीं चाहिये चाहे मिले हजार ।६३९।
बहुत रानियां करने की थी प्रथा पुरानी एक ।
हानि लाभ कुछ हो चाहै, समझ करे विवेक ।६४०।
आज द्विपत्नि रखने पर है, सरकारी प्रतिबंध ।
किसी परिस्थिति में न मिली है मन को सौव्यसुगन्ध ।६४१।

उचित समय उचितता-सन पर आ बैठे राजकुमार ।
रत्नवती वर माला लेकर, झट से रही पधार ।६४२

स्वयंवर का स्वर :

गंगा गगनांगरग से उतरी, ले निर्मल जलधार ।
ज्योत्स्ना छिटक गई भूतल पर, ले नूतन आकार ।६४३।
खुली रूप की गाठ टूट कर, करण-करण बिखर पड़ा है ।
कंकरण नुपूर खरण-खरण करते, इचरज उन्हे बड़ा है ।६४४।
उठा स्वयंवर मडप से स्वर, जिसको यह मिल जाये ।
उसका जीवन भाग्य और मन, शतदल सम खिल जाये ।६४५।
सखियो का संघात साथ में, और धाय माता है ।
सब का परिचय करवाने का काम दिया जाता ।६४६।
चय-शिक्षा-सम्पत्ति-सौख्य-बल-स्वास्थ्य-प्रेम-अधिकार ।
धर्म-रानियां-रूचि का वर्णन, बतलाती घर प्यार ।६४७।
रत्नवती सुन लेती लेकिन, आगे चल देती है ।
इसकी अपनी किस्मत ऐसी, करने बल देती है ।६४८।
अतिथि विशेष जहां आमन्त्रित वही सेठ धनदत्त है ।
अभयसिह जी वही साथ में, बैठा बन सयत है ।६४९।
भूपो राजकुमारो को तज, आगे बढ़ी कुमारी ।
बोले लोगो मानसिक कोई होगी इसे बीमारी ।६५०।
लौट इधर फिर आ जायेगी पहनायेगी माला ।
किया इसारा इसने मुझको, इच्छित फलने वाला ।६५१।
गई अभय के साथ प्रेम से, पहनाई वर माला ।
कहा सेठ ने यह तो नौकर, मैंने इसको पाला ।६५२।
रत्नवती बोली डट करके, यह तो मेरा काम ।
आवश्यकता नही किसी को, जो ले इसका नाम ।६५३।

नारी होने की कमजोरी, कभी न मन पर लाना ।
नर को मात करे ऐसी ही बात बनाते जाना ।६८०।
हम न साथ में आयेंगे ये शिक्षायें आयेंगी ।
आयेंगी विपदायें तब ये तुझे बचा पायेगी ।६८१।
ऐसे कहकर रहकर तट पर, देख रहे हैं सारे ।
वाहन चलने की तैयारी, बिछुड़ रहे जन प्यारे ।६८२।
दिखे देर तक सागर पर वे वाहन चलते-जलते ।
क्या न देरतक दिखता रहता, सूरज ढ़लते-ढ़लते ।६८३।
लौटे सारे अपने घर पर याद लिये प्रियजन की ।
बहुत दिनों तक दुःख देती है, वेला वह बिछुड़न की ।६८४।
मिला स्नेही साजन लेकिन, बिछुड़ो-मत जीवन भर ।
जीवन भर क्या रोया जाये, हृदय नेत्र भर-भर कर ।६८५।

बुरी नीयत :

रत्नवती को देखा ही था जब था हुआ स्वयंवर ।
सेठ सोचता अब अवसर है, डोरा डालूं इस पर ।६८६।
अभयसिह के वाहन में वह आता है दिन-रात ।
बातें करता बड़े प्रेम से और मिलाता हाथ ।६८७।
रत्नवती को बुरी नजर से, लगा देखने घूर ।
कामी अपने से न मानता, परियोको भी दूर ।६८८।
रत्नवती ने कहा अभय से, सेठ बडा बदमाश ।
आने मत दो यहां आज, से इसे आपके पास ।६८९।
नजर बुरी है बुरी भावना, बुरा आदमी लगता ।
बूरे जैसा मीठा बन कर, हम लोगो को ठगता ।६९०।
अभय भद्रमन बोला भद्रे, ऐसी लगी न बात ।
सेठ और मैं बहुत दिनों से, रहने आये साथ ।६९१।
नहीं सेठ की बात नाथ यह बात और है मानो ।
पारी की गति नारी समझे, खारी मीठी जानो ।६९२।

अच्छा तेरे कहने से मैं सावचेत हूं मन में ।
हर्ज नहीं होता है अपना आने से वाहन में ।६९३।

अभयसिंह को मारा जाये, युक्ति सोचता सेठ ।
बोला चलो चले तूतक पर, गप्प लड़ाये बैठ ।६९४।

भूत भविष्यत वर्तमान पर, चिन्तन चलता भारी ।
चिन्तनशील पुरुष करते है, जग की चिन्ता सारी ।६९५।

देखो इधर-उधर सागर है ऊपर है आकाश ।
स्थल होने का नही अभी हम कर सकते विश्वास ।६९६।

जल के जीव-जन्तुओ का भी एक नया संसार ।
देखे सुने नही हमने वे है इनके आकार ।६९७।

इतने में ही मगरमच्छ की पूंछ नजर में आई ।
आठ मुंह आ गए सामने उस पर नजर टिकाई ।६९८।

देखो देखो । अभय ध्यान से, लगा देखने क्षणभर ।
अभय सेठ का धक्का खाकर, गिरा सिंधु में जाकर ।६९९।

सही सलामत :

सुना धमाका चमक उठी मन, रत्नवती और दासी ।
तूतक पर चल आई तत्क्षण प्रियदर्शन अभिलाषी ।७००।

जाना अभय गिरा सागर में, रोई बूम मचाती ।
अरे बचाओ, दौडो दौड़ोगिरे प्राण प्रिय साथी ।७०१

सेठ बहुत दु.खित होता है, रोता है जोरों से ।
मैंने इसे गिराया क्या यह कह सकता औरो से ।७०२।

रत्नवती का पाला कुत्ता कूद पडा सागर में ।
अभयसिंह को पकड़ मुंह से ले आया उपर में ।७०३।

कूदे झट तैराक खलासी छोटी होडी छोड़ी ।
बचा लिया है अभयसिंह को, करके दोड़ा-दौड़ी ।७०४।

अभयसिंह को बहुत देर से. कुछ-कुछ आया होश ।
इसे पता होने से ही यह दे सकता है दोष ।७०५।

अपने आप नही गिर सकता, चक्कर मुझे न आया ।
नही किसी ने मुझे दिखाया, कुछ भी नहीं पिलाया ।७०६।

संभव है धनदत्त सेठ ने, मुझे गिरायो जल में ।
कभी-कभी पत्थर गिर जाते मानव की अकल मे ।७०७।
रत्नवती ने कही मुझे जो, वही सत्य है बात ।
एक बचाने वाला ही, आयुः कर्म साक्षात ।७०८।
महामंत्र नवकार स्मरण ने दिया शरण साक्षात ।
महिमा बहुत असाधारण है, कारण सब अज्ञात ।७०९।
दुष्ट दुष्टता नही छोड़ता, चाहे कुछ हो जाये ।
विषधर विष उगलेगा, दुनिया चाहे दूध पिलाये ।७१०।
सावधान बनने का मैंने उत्तम अवसर पाया ।
इतने में ही हाथ जोड़ता सेठ सामने आया ।७११।

कपट भरा विनय ?

बोला सेठ माफ कर देना, यह मेरा अपराध ।
कोई पूछे तो भी कहना, मुझे न कुछ भी याद ।७१२।
नहीं करूंगा कभी दुबारा, ऐसा कार्य जघन्य ।
तुम उपकारी महापुरुष हो, धार्मिक जीवन धन्य ।७१३।
लोग पचा पाते हैं पारा, पचा न पाते बात ।
बचा न पाते इज्जत करके, ज्ञात बात अज्ञात ।७१४।
अभय सरलता से बोला है, भय न करो मेरे से ।
मिटने का क्या बोला जाता, जग के अंधेरे से ।७१५।
असफल सेठ सोचता अब मै युक्ति लगाऊ भारी ।
मरे अभय फिर हाथ लगे यह रत्नवती सन्नारी ।७१६।
खलासियों को लालच देकर मेरे साथ मिलाऊं ।
ऐसा जाल बिछाऊं, वाछित कार्य पूर्ण कर पाऊं ।७१७।
रत्नवनी ने ताड़ लिए है, आंखें और इशारे ।
चीता, चोर, कबाण, वाण, झुक, क्या न जोर से मारे ।७१८।

रत्नवती की चाल :

सुदर्शना को रत्नवती ने, वात सकल समझाई ।
पुरुषों से भी अक्लदार, क्या होती नही लुगाई ।७१९।
वात अभय को समझा भी दी, जो कुछ करने जाती ।
वह क्या दूरदर्शिता होती जो पीछे मे आती ।७२०।
रखा अभय को गुप्त, काच की पेटी में इस वार ।
नही किसी को पता चले वस यही समझ का सार ।७२१।

दोहे

वोरी भरी अनाज की, दी सागर मे डाल ।
चिल्लाई फिर जोर से कूदी नौ-नौ ताल ।१।
हाय ! हाय ! प्रिय गिर गए, दौडो करो बचाव ।
खलासिया । उतरो तुरन्त ले लो छोटी नाव ।२।
सेठ उठा वोला, सुनो जाओ झटपट दौड ।
अभयसिह को लो वचा, कार्य अन्य दो छोड ।३।
सुनी अनसुनी कर सभी वेठे धारे मौन ।
मिले हुवे सव सेठ से, उठे वचाये कौन ।४।

तर्ज मूल की :

रोती रोती रत्नवती थक गई रही चुप वैठ ।
इतने मे आय है चलकर, दु.ख दिखलाने सेठ ।७२२।
अरे हुआ क्या ? क्यो रोती हो, क्या सेवा वतलावो ।
रत्नवती ने कहा गिरे प्रिय, उनके प्राण बचाओ ।७२३।
देर हो गई गिरे हुए को, कैसे पता लगाये ।
चिनगारी ही नही रही तव, कैसे आग जलाये ।७२४।
सुदर्शना ने कहा आप से, दी इतनी आवाज ।
कोई आया नही वचाने पता न क्या है राज ।७२५।

बोला सेठ पता लगता तो उठकर आते सारे ।
अभय आपके नहीं समझ लो, साथी अभय हमारे ।७२६।
हम सब उनके, खातिर, दे सकते है प्राण ।
पैरों को जो नहीं बचाये, वे कैसे पदत्राण ।७२७।
होनहार ही समझो इसको, कौन टालने वाला ।
आप पास में ही बैठी थी, क्यों न उसे संभाला ।७२८।
बिठलाया क्यों उसे किनारे, क्यों न उसे समझाया ।
जान-बूझ कर गिरे नहीं वे, होगा चक्कर आया ।७२९।
खैर हुआ सो हुआ, समझ लो रोने मे क्या सार ।
उसके साथ आपका था बस इतना ही संस्कार ।७३०।
धरो धैर्य मत डरो आपके साथ सभी हम लोग ।
सहने ही पड़ते है सबको, प्रिय अप्रिय सयोग ।७३१।

सेठ का सपना :

आश्वासन दे सेठ सोचता, काम बनेगा अपना ।
क्या न सुफल देने वाला भी, आता कोई सपना ।७३२।
लाठी नही टूटने पाई, मरा कालिया नाग ।
सींचे विना सलिल की धारा, हरा हो गया बाग ।७३३।
अब इसका है कौन ? बनालू मै मेरे आधीन ।
इन कामो मे मेरे से वढ है भी कौन प्रदीन ।७३४।
गया सेठ अपने वाहन पर, मन के लड्डू खाता ।
निकले दिन दो चार वाद में उसी जगह पर आता ।७३५।

चेतावनी :

बोला, रत्नवती क्यों रखती, अपना चित्त उदास ।
अभयसिह के बदले समझो, मुझे स्वय का दास ।७३६।
कमी नही है किसी वात की, सुख से खावो पीवो ।
हास्य-विलास भोगमय जीवन बड़े प्रेम से जीओ ।७३७।

मै तेरा, तू मेरी, यह धन-यौवन परिजन तेरे ।
तेरा हुक्म चलेगा हम पर, तोड़ो मन के घेरे ।७३८।
तन से मन से स्वीकारो बस, करो हृदय से प्यार ।
प्यार विना संसार शून्य है, नभ का क्या आधार ।७३९।
सुनकर वैन नैन कर रोते, रत्नवती यो वोली ।
अरे दुष्ट ! शैतान ! सेठ क्या मुझे समझता भोली ।७४०।
बुरा सोच मत बुरा वोल मत, छुरा देख यह तीखा ।
पतिव्रता ने जीना पीछे पहले मरना सीखा ।७४१।
तेरे प्राण त्राण पायेगे ऐसा भ्रम मन रखना ।
मरता हूं या नही सोचकर, भला नही विष चखना ।७४२।

एक और बार :

सुनकर सेठ सोचता मन मे, मन न अभी है शान्त ।
चला गया चुपचाप यहा से, वनकर के संभ्रात ।७४३।
आज नही कल हो जायेगी, यह मेरे आधीन ।
जीवन भर क्या रह पायेगी, उदासीन मत दीन ।७४४।
सुदर्शना को बुलवाया है, लोभ बहुत दिखलाया ।
रत्नवती से मुझे मिला दे लेले यह धन माया ।७४५।
सुदर्शना ने कहा आपको धन का बड़ा घमण्ड ।
हम दोनो अबलाओ का है, निर्णय शील अखण्ड ।७४६।
रत्नवती की आशा छोड़ो जो जीवन की आशा ।
हरामियो का हत्यारो का पड़ता उलटा पासा ।७४७।
सुदर्शना ने रत्नवती से सारी बात बताई ।
खारी लगने लगी सेठ को, जीवन नानखताई ।७४८।
कुछ न बिगाड़ सकेगा अपना, है यह पक्का कामी ।
डरता नही हरामी चाहे हो जाये बदनामी ।७४९ ।

फिर भाग गया :

दिन दो-चार वाद मे पहुचा, सेठ पुन: घर ग्राश ।
वया कुछ सोचा, समझा, वोला हसो मधुरतम हास ।७५०।
स्त्रिया पुरुष से अलग रहो कव, सोचो गले उतारो ।
आई हुई सामने लक्ष्मी को मत ठोकर मारो ।७५१।
स्वीकारो स्वेच्छा से इसमे हित है जीवन भर का ।
ना करने पर सह न सकोगी, वल बलशाली नर का ।७५२।
बलपूर्वक पाने मे मुझको शर्म नही आयेगी ।
सभी तरह से पराधीन तू भाग कहां जायेगी ।७५३।
सुनते ही मुख मोड़ लिया है वोली रूखे वोल ।
ध्यान परस्त्री का तज दे तू जीवन वड़ा अमोल ।७५४।
ध्याले ध्यान जिनेश्वर का जो कर दे भव से पार ।
खोल रहा क्यों अपने हाथो नर्ककुण्ठ का द्वार ।७५५।
बोला सेठ किसे देती हो, हितकारी उपदेश ।
आ जा ऐश करे हम मिलकर, तज कर मन सकलेश ।७५६।
पछतावा पीछे न पड़े है, पहले श्रेष्ठ मनाना। ।
चाहे जैसे पड़े बनाना, काम अवश्य बनाना ।७५७।
सुनकर बनी चण्डिका देवी, बोली सुन रे दुष्ट ।
छूने की जो कोशिस की तो, फूट पड़ेगा कुष्ट ।७५८।
तेज कटारी लिए हाथ मे, खड़ी हुई तत्काल ।
जीवित जा न सकेगा वापिस, बोल जरा साभाल ।७५९।
वड़ी जरा भी एक कदम तव, सेठ वहा से भागा ।
बलात्कार करने का झूठा दुस्साहस भी त्यागा ।७६०।
रोम-रोम मे आग लगी है कहो उपाय करे क्या ?
यह छुए इससे, सागर में, गिर कर स्वयं मरे क्या ।७६१।
सुदर्शना ने कहा मरे क्यो पीछे भाग गया है ।
अपने पर पति परमेश्वर की समझो बड़ी दया है ।७६२।

राज महलों में भेट :

इतने में वाहन आ पहुंचे, विजयनगर के माय ।
लेकर भेट सेठ पहुंचा है राज भवन के तांय ।७६३।

नृप ने पूछा कहो सेठ क्या लाये वस्तु नवीन ।
व्यापारीजन इन वातों में होते बड़े प्रवीन ।७६४।

आते जाते रहते हो तब, नई वस्तुएं लाते ।
दिखलाते न हमें बतलाते, सब कुछ स्वयं छुपाते ।७६५।

सुनकर सेठ सोचता अवसर कैसा उत्तम आया ।
रत्नवती ही सौपूं नृप को, पाऊ सुयश सवाया ।७६६।

मुझे छुरा दिखलाया उसका, फल उसको दिखलाऊं ।
ऊंचा सिर न करेगी ऐसा पाठ उसे सिखलाऊं ।७६७।

राजन् ! एक रत्न लाया हूं, अनुपम और अलभ्य ।
सभ्य रत्न परखा करते है, परखोगे न असभ्य ।७६८।

नारी रतन श्रेष्ठ रत्नों में, किससे तोला जाये ।
सब कुछ, कुछ भी नही, प्रशसा मे जो बोला जाये ।७६९।

मिली अकेली वन मे रोती, दुखियारी बेचारी ।
हुक्म करो तो भेंट करूं वह, सुन्दर रूप पिटारी ।७७०।

रूप और गुन उसके जैसे कही नही अन्यत्र ।
जब वह नमी तब था मानो हस्तपुण्य नक्षत्र ।७७१।

राजा बोला सुनो सेठजी महलों मे भिजवावो ।
वर्णन पीछे करते रहना, अब मत देर लगाओ ।७७२।

अभी वाहनो मे ही है वह घर पर नही गई है ।
अथ रथ भेजो, लिए आपके बिल्कुल वस्तु नई है ।७७३।

मोहिनी मंत्र ।

स्त्री का नाम कान में सुनकर, मन अस्थिर बन जाता ।
बड़ा मोहिनी मत्र यही है त्रिभुवन गोता खाता ।७७४।
ऋषि मुनि त्यागी और तपस्वी क्या न चुकते ध्यान ।
स्त्री की माया अजब-गजब है क्या समझे इन्सान ।७७५।
धर्म भूलते कर्म भूलते बनते स्त्री के दास ।
भटक अटक जाते है राही तजकर ज्ञान प्रकाश ।७७६।
इन्द्राणी जब लात लगाती गुस्से में आ करके ।
इन्द्र पांव सहलाते, सिर पर चोट सोट खा करके ।७७७।
सिर है कठिन पांव है कोमल हुई नही क्या पीड़ा ।
ऐसा कहते हुए आती स्वर्गाधिप को पीड़ा ।७७८।
नर की क्या गिनती है बोलो नर धरती का कीड़ा ।
नाड़ी चाहे चले पिंगला और सुषुम्ना इड़ा ।७७९।
धन्य-धन्य है उसको जिसने, विजय काम पर पाई ।
डिगे नहीं वे तिलोतमा भी, भले डिगाने आई ।७८०।
तन से मन से और वचन से, जिनकी निर्मल आत्मा ।
ब्रह्मचर्य का अर्थ यही है, पूर्णब्रह्म परमात्मा ।७८१।

वाहन से महलों में :

राजकीय रथ-दास-दासियां आज्ञा पाकर आये ।
आया सेठ साथ में, स्त्री को, महलों में भिजवाये ।७८२।
कहा सेठ ने तुमको मैने, सोंपी नृप के हाथ ।
रथ बैठो महलों में जा, रहिये सुख के साथ ।७८३।
रत्नवती ने सुदर्शना ने सोचा यह क्या खेल ।
धूर्त ने बिठलाया है राजा से क्या मेल ।७८४।
चलना ही होगा अब हमको, जिद करना बेकार ।
वाहन से सामान स्वयं का, सारा लिया उतार ।७८५।

पेटी रही कांच की जिसमें बोझ बडा है भारी ।
कहा इसे रथ में रखवादो हमे यही है प्यारी ।७८६।
कहा सेठ ने रहने दो यह और मिलेगी पेटी ।
पेटी जो न साथ में दोगे, तो ना उतरे हेठी ।७८७।
आखिर पेटी को रखवाया रथ में अपने साथ ।
मन संशय करता है आगे क्या-क्या होगी बात ।७८८।
चला त्वरितगति रथ आया है राजा के दरबार ।
महलवासियों ने मिलकर के किया बडा सत्कार ।७८९।
हुई व्यवस्था तुरन्त फुरत सब नौकर चाकर हाजिर ।
कहने की न जरूरत केवल देखे नजर उठाकर ।७९०।

बल से नहीं बुद्धि से :

रत्नवती ने रखवाया है अपना सब समान ।
सभी अपरिचत व्यक्ति अपरिचित ध्यान मान सम्मान ।७९१।
पान स्नान भोजन आदि का सारा हुआ प्रबंध ।
क्योकि बिना मात्रा के बनता, कभी न कोई छन्द ।७९२।
अतरंग दासी ने आकर कही कान में बात ।
मानसिह नृप की बीतेगी, आज यही पर रात ।७९३।
समझ गई होगी तुम सब, कुछ मै क्यों कहूं दुबारा ।
"किं बहुना सुज्ञेपु" उक्तिका, ले लो क्यों न सहारा ।७९४।
सुनकर तीनों करे मंत्रणा, कहो किया क्या जाये ।
भाई से मिलने को भाई अपना नाम बताये ।७९५।
चाहे भाई मानसिह है, किन्तु अभी कामान्ध ।
कामान्धो को नही दीखता जाति-ज्ञाति सबंध ।७९६।
काम शान्त करने का पहले सोचा जाय उपाय ।
सुदर्शना की रत्नवती की रही सही यह राय ।७९७।

सुदर्शना ने कहा अभय से, कहिये जीवन हाल ।
जिससे सारी रात नाथ को लूंगी में संभाल ।७९८ ।
आद्योपान्त सुना देता है अभयसिंह निज जीवन ।
सुदर्शना ने जीवन पाया, मुख ने ज्यों निष्ठी-वन ।७९९।
उसी कांच की पेटी में फिर किया अभय को बंद ।
नंद फंद गोबिंद जानते किसका क्या संबंध ।८००।
रत्नवती को भी बिठलाया अलग दूसरे स्थान ।
सुदर्शना बैठी सज-करके तन नूतन परिधान ।८०१ ।

सुदर्शना की कला :

प्रहर रात्रि जाने से आये महलों में नृप मान ।
सुदर्शना ने दिया नृपति के लायक आदर मान ।८०२।
बड़ी कृपा की नाथ, । विराजो, ऊंचे सिंहासन पर ।
नर का ध्यान क्या न जाता है मिलते ही भाषन पर ।८०३।
वसन व्यवस्थित भावन व्यवस्थित वचन व्यवस्थित पाया ।
पूर्ण व्यवस्थिता ने नृप पर पूर्ण प्रभाव जमाया ।८०४।
सुनी सेठ से बात आपकी खुश हो बाला राय ।
दु:ख छूटा अब रहो आनन्द से, इन महलों के माय ।८०५।
पटरानी मैं शीघ्र बनाऊं, रत्नवती को साथ ।
कर आदर सत्कार प्यार से, रक्खू महल मंझार ।८०६।
किस आलय को करे अलंकृत रत्नवती इस बार ।
उससे मिलने को मैं आया, कहो वचन हितकार ।८०७।
दासी बोली अभी मिलाऊं सुनों नाथ धर प्यार ।
पहला नियम बाई का ऐसा, सुनो कथा मम लार ।८०८।
शर्त एक है उसमें वह भी सुन लो, देकर ध्यान ।
'हां' और 'वाद' अलावा कुछ भी बोले तो नुकसान ।८०९।

कथा रोक दूं उसी स्थान पर, रात्रि दूसरी तांय ।
शर्त करो मंजूर आप तो, कहूं कथा सुखदाय ।८१०।
बस इतनी-सी शर्त्त आपकी मुझे मान्य है सारी ।
आप सुनावो मैं सुनता हूं, कथा प्रेम–रसवारी ।८११।

आप बीती बात :

जब छोटी थी तब नानी से सुनती रोज कहानी ।
नई कहानी कहती मेरी नानी बड़ी सयानी ।८१२।
कहानियां सुनने मे आता, बालक को रस-भारी ।
जीवन एक कहानी ही है, जीवे जो नर–नारी ।८१३।
जिसको सुनकर हम कुछ सीखे, सुन्दर वही कहानी ।
भिन्न-भिन्न सोच वाले होते इस धरती के प्रानी ।८१४।
एक कहानी बहुत पुरानी मुझे अभी है याद ।
नही सुनाऊ कृपया सुनिये कहिए या हा वाद ।८१५।
इसी भूमि पर नगर स्वर्णपुर, सुन्दर और विशाल ।
नृपति प्रतापसिंह सुखकारी, न्यायी दीनदयाल ।८१६।
मानसिंह और अभयसिंह दो पुत्र गये क्रीड़ार्थ ।
आते हुए सरोवर तट पर, बैठे विश्रामार्थ ८१७।
एक सेठ की सुता वहा पर आई भरने पानी ।
उसके तन मन पर छाई थी मनहर और जवानी ।८१८।
मानसिंह ने गोली मारी गागर हो गई काणी ।
लगा भिगोने कुंवरी का तन झर-झर झरता पानी ।८१९।
अभयसिंह के कहने से फिर मीण चला जल रोका ।
इतना सुनकर रामसिंह ने, बस दासी को टोका ।८२०।
यह तो बात हमारी ही है, बोल उठे नृप मान ।
नही बोलना कही बीचमे रहा न उसका ध्यान ।८२१।

मैंने तो मेरी नानी से जो भी सुनी कहानी ।
वही यहां पर कहने बैठी देख रहे हैं ज्ञानी ।८२२।
शर्त मुजब अब नहीं कहूंगी शेष कथा का भाग ।
इसी समय कल आना सुनना, धर कर मन अनुराग ।८२३।
वचनबद्ध नृप चला गया है रह गई बात अधूरी ।
बात सुनाने में होती है चतुराई भी पूरी ।८२४।

दूसरे दिन की बात :

दिवस दूसरे ठीक समय पर पहुंच गये महीपाल ।
बैठ सिंहासन बोले बोलो, आगे का जो हाल ।८२५।
सुदर्शना अब लगी सुनाने, आगे का वृत्तान्त ।
सुनने का आनन्द तभी है मन स्थिर हो अभ्रान्त ।८२६।
कन्या ने जा मात–पिता से बात कही है सारी ।
शहर छोड़ने की सेठों ने कर ली सब तैयारी ।८२७
भूमिनाथ को ज्ञात हुआ जब, न्याय किया हितकारी ।
सुत को शहर त्यागने की दी आज्ञा-पत्र मंझारी ।८२८।
अभयसिंह भी साथ हो गया, भ्रातृ-प्रेम आदर्श ।
वन में मुनि दर्शन कर पाये प्रवचन सुन मन हर्ष ।८२९
लिएनिगम कुछ महामन्त्र पर, मन से लगन लगाई ।
प्यास लगी पानी पाने को, दौडा छोटा भाई । ८३०।
पाया एक सरोवर पर जल पिया लिया है हाथ ।
देख एक बस शिलालेख तब, अभय सोचना बात ।८३१।
पियो न पानी रहो न वन में संकट है जीवन का ।
भय न अभय के मन पर छाया, दर्शन क्षत्रियपन का ।८३२।
नीर पिलाऊंगा भाई को, नहीं रखूंगा प्यासा ।
जो होगा सो होगा मै भी देखूं क्यों न तमाशा ।८३३।

पानी लाकर पिला दिया है, रहे रात को वन मे ।
सोया मान अभय जगता है, प्रहरी बन जीवन मे ।८३४।
अपनी बात जानकर नृप के मुख से निकली वाणी ।
यह तो सारी बात हमारी थे हम ही दो प्राणी ।८३५।
दासी बोली शर्त तोड़ दी बात करू मै बंद ।
सुनने और सुनाने का बस, बिगड़ गया आनन्द ।८३६।
राजा बोला भूल हो गई, स्मृति न रही है शर्त ।
उतावल मे नही दिखता रास्ते मे भी गर्त ।८३७।
कल ही वात सुनाऊगी बस, आज जाइये उठकर ।
बहुत तेज बरसाते पानी काले बादल घुटकर ।८३८।
नीद नहीं आई राजा ने रात बिताई जागकर ।
पीछे देख शिकारी मृग-ज्यों जान बचाता भगकर ।८३९।

तीसरे दिन की बात :

कब उगे दिन और आथ में प्रहर रात कब जाये ।
कब महलो में जाऊ दासी कब वह कथा सुनाये ।८४०।
सोया हू मै भाई जगता देता पहरा वन मे ।
वर्णन सुनू हुआ जो आगे उत्सुकता है मन में ।८४१।
दिवस तीसरा आया, आया महलों मे महाराजा ।
समाचार पत्रो में आते समाचार जो ताजा ।८४२।
सुदर्शना से बोला, बोलो झटपट कथा सुनावो ।
पूरी करो कहानी मेरे मन को मत तरसाओ ।८४३।
होगी सुनी भले नानी से, है यह मेरी बात ।
जो पहरा देता है भाई अभय वही साक्षात ।८४४।
दासी बोली नाथ विराजो, सुनो लगाकर कान ।
एक नाम वाले इस जग मे बहुत है इन्सान ।८४५।

नाम देखकर काम देखकर क्यों अनुमान लगाना ।
सही ठिकाना पता मिले तब, मिलने को ललचाना ।८४६।
वहां देवियां आईं, काली लक्ष्मी ने की बात ।
मारा नहीं अभय को छोड़ा, रहा जगाता रात ।।८४७।
राक्षस आया उसने छोड़ा, आया काला नाग ।
उससे मणि ली अभयसिंह ने, साहस किया अथाग ।८४८।
मणि बांधी भ्राता के पल्ले दिलवाने को राज ।
सोचा मेरे भाई होंगे मानसिंह महाराज ।८४९।
नागिन आई डसा अभय के, व्याप्त हुआ विस तन में ।
लिया मौत ने एक वार तो मानो अपनी शरन में ।८५०।
सुनते ही नृप बोल पड़ा है क्या न अभय बच पाया ।
दासी बोली बोल बीच मे, गजब आपने ढ़ाया ।८५१।
कहने देते कथा न मुझको शर्त रहे हो तोड़ ।
शर्त टूटते ही मैं वार्ता देती कल पर छोड़ ।८५२।
जावो, कल फिर आवो, सुनने आगे वाला हाल ।
मानसिंह राजा का मन भी हुआ बड़ा बे-हाल ।८५३।
अगर वही मर गया अभय तब, मिलने की क्या आशा ।
जीवन एक कहानी, अथवा मानो खेल तमासा ।८५४।
खाना भूला पानी भूला, आती याद अभय की ।
मन की बड़ी विचित्र दशा है खेद-पूर्ण विस्मय की ।८५५।
गया छोड़कर भवन शयन-हित, चैन नहीं तन-मन में ।
आकर्षण है कथा श्रावण में, या जीवन में धन में ।८५६।

चौथे दिन की बात :

चौथी निशा प्रहर जब बीता, भूप वहीं पर आया ।
कथा सुनावो अब आगे को, मन उत्सुकता लाया ।८५७।

मानसिह पढ पत्र गया है, घर मन मे सन्तोष ।
तीन दिनो तक पडा रहा वह अभय वहीं बेहोश ।८५८।
मदनमंजरी सुता सेठ की बैठ गई हठ धार ।
वरण किया है शव का मन से, पूर्वजन्म संस्कार ।८५९।
योगीश्वर ने आ चौथे दिन जहर उतारा सारा ।
मदनमंजरी बनी सुहागन अभयसिह के द्वारा ।८६०।
सार्थवाह के साथ छोड़कर विजयनगर चल आया ।
लूटा मारा गया यहा पर, मुश्किल से बच पाया ।८६१।
कुम्भकार घर लाया उसने करवाया उपचार ।
दया भावना से होता है स्वार्थ रहित उपकार ।८६२।
नरवलि देने उसे ले गया व्यापारी धनदत्त ।
धन के बड़े नशे में उसका, चित्र बना उन्मत्त ।८६३।
शासन देवी सहायिका बन, सेवा करने आई ।
रुकी हुई नावाए सारी, पढ़कर मन्त्र चलाई ।८६४।
गया रत्नपुर रत्नवती को लाया आया लौट ।
वाहन मे धनदत्त सेठ के, मन में उपजी खोट ।८६५।
धक्का दे सागर में डाला गया बचाने श्वान ।
क्या न बचाने वाला होता बहुत अधिक बलवान ।८६६।
सावधान बन रत्नवती ने प्रिय को कही छिपाया ।
सेठ हरामी कामी बनकर, स्वयं सामने आया ।८६७।
रत्नवती ने छुरा दिखाया, चला न उसका जोर ।
हल्ला सुनकर भग जाते है कामी अथवा चोर ।८६८।
पहुंचाया तब राजमहल मे सुन बोले सरकार ।
कहां छिपाया कहो अभय को, दिखलावो इस बार ।८६९।

भ्रातृ मिलन :

सुनते ही यह बात भ्रात की, अभय आ गया बाहर ।
बोला पूज्य भ्रातर मैं हूं अनुज आपका हाजर ।८७०।
उठे मानसिंह लगा लिया है भाई को छाती से ।
साथी बांह डाल मिलता ज्यों अपने प्रिय साथी से ।८७१।
आनन्दाश्रु निकले नयनों से, लगे भिगोने गात ।
कहने की है बहुत किन्तु मुख नहीं निकलती बात ।८७२।
आंखें पहले नहीं उठाती हुई पूर्णतः बन्द ।
पलकें भी ले रही मान लो, मिलने का आनन्द ।८७३।
बहुत समय तक दोनों भाई बोल न पाये मुख से ।
भ्रातृ मिलन फिर देहालिंगन भिन्न नहीं है सुख से ।८७४।
कहना नहीं किसी को कुछ भी केवल मिलना ही है ।
कहता फूल न मै कुछ कहता केवल खिलना ही है ।८७५।
मधुर मिलन क्षण लगे भुलाने जीवन के सब कष्ट ।
कर पायेगी कहां लेखिनी लिखकर उसको स्पष्ट ।८७६।
आखिर मधुर स्वाद चख रसना, कब तक चुप रह सकती ।
कहती ही है, मीठा-मीठा जितना वह कह सकती ।८७७।
भूल गया छोटे भाई को, है यह मेरी भूल ।
भाई ! प्रेम निभाया तूने, रहा सदा अनुकूल ।८७८।
रत्नवती को मन से चाहा, माफ करो अपराध ।
देखा नहीं लिया था सुनकर, केवल कर्णास्वाद ।८७९।
सोए दोनों बड़ी शांति से, नीद सवेरे टूटी ।
बन्धु-मिलन का उत्सव होगा, बात शहर मे फूटी ।८८०।
सारे पुरवों को सिणगारा है, हुआ महोत्सव भारी ।
गाते और बजाते मिल-कर, मस्त बने नर-नारी ।८८१।

मान अभय की गई निकाली, असवारी-सुखकारी ।
बात अभय की बड़ चाव से, पूछ रहे नर-नारी ।८८२।
'भाई हो तो ऐसा ही हो' निकल रही आवाज ।
जो भाई भाई लड़ते है आई उनको लाज ।८८३।
बाजारों मे घूम-घुमा कर राज सभा में आये ।
फूल गये बरसाए जय-जय नारे जोर लगाए ।८८४।

अपराधी पर दया :

बुलवाया धनदत्त सेठ को, पाई है फटकार ।
बडे सेठ कहलाते हो तुम, पापों के भण्डार ।८८५।
धन सम्पत्ति लूट ली सारी, प्राण-दण्ड फरमाया ।
अभयसिंह को दया आ गई जीवन दान दिलाया ।८८६।
सिर मुण्डवा गधे बिठाया, मुंह करवाया काला ।
गली-गली में फिरवाया है, देकर देश निकाला ।८८७।
पुलिस लोभ मे जो आए थे, उन्हे किया बर्खास्त ।
बिना दण्ड अपराध दुष्टजन, होते नही परास्त ।८८८।

उपकारी का सत्कार :

कुम्भकार को दिया नृपति ने, राजकीय सम्मान ।
नही जाति से किन्तु गुणों से, है इन्सान महान् ।६८९।
जनता ने अब जान लिया है भले-बुरे का भेद ।
झरता पानी बतला देता, कहा घड़े में छेद ।८९०।
मदनमजरी को बुलवाया, किया बड़ा सत्कार ।
रत्नवती ने किया बहन को, नमस्कार धर प्यार ।८९१।
सौत मौत सम मानी जाती लेकिन ये अपवाद ।
सहोदराये सम रहती पर करती कुछ न विवाद ।८९२।

एक-दूसरी के सुख में सुख, दुख में दुख जब आए ।
मूलमन्त्र है यही प्रेम का, जो गर प्रेम निभाये ।८९३।

स्त्रियां, सौत फिर लड़े नहीं, यह इचरजकारी बात ।
करामात कुछ पुण्य भाव की, रहती है नित साथ ।८९४।

एक नहीं दो स्त्रियां अभय के, और महल सुखकारी ।
कमी नहीं है किसी बात की, पुण्य प्रकृति हितकारी ।८९५।

दिवस माह पल सम बीते, भोग रहे सुख भोग ।
भाई के प्रति भक्ति-भाव का भूला नहीं प्रयोग ।८९६।

महामन्त्र नवकार मन्त्र का जाप बराबर जारी ।
मां भगिनी सम माना करता, निज मन से परनारी ।८९७।
नैतिक जीवन जीने वाला, सदा सुखी संसारी ।
उस नर का दर्शन भी घातक, जो है भ्रष्टाचारी ।८९८।
'आचारः प्रथमो धर्मः' का सूत्र प्रेम से पाले ।
जाति समाज राष्ट्र को अब तो ऊंचा आप उठा ले ।८९९।

पुनः पिता के पास :

मिली सूचना मात–पिता को, बहुत दिनों के बाद ।
अपने सुत हैं विजय नगर मे सुना सुखद संवाद ।९००।
देशनिकाला दिया गया था, कैसे उन्हे बुलाये ।
प्रजाजनों की सभा बुलाई, सब हालात सुनाये ।९०१।
राज्य किये भोलाऊं बोलो, सोचो दृष्टि पसार ।
मान अभय को सुना है मैंने विजयनगर मंझार ।९०२।

गुरुदेव का पदार्पण :

न्यायनीति से राज्य चलाते प्रजा आनन्द माय ।
कहा सभा ने उन्हें बुलाओ, यही हमारी राय ।९०३।

सभी एक मत, अथ राजा ने, लिखा प्रेम से पत्र ।
सचिव गया लश्कर लेकर के पहुंच गया है तत्र ।९०४।
पत्र पिताजी का पाते ही आए दोनों भ्राता ।
नगर प्रवेश हुआ है जिस दिन, नगर सजाया जाता ।९०५।
मात–पिता के चरणों में झुक, नमस्कार करते है ।
मन को पावन करने के हित-हर्ष आंसू झरते है ।९०६।
जब से निकले तब से लेकर सारी कथा सुनाई ।
क्या न पूर्वजों की देती है, काम हमेश पुन्याई ।९०७।
'हमने किया' अहंकार यह, कभी न मन पर लाना ।
सब कुछ करके हाथ जोड़कर, छोटा-सा बन जाता ।९०८।

गुरुदेव का पदार्पण :

धर्मघोष आचार्य प्रवर का, हुआ पदार्पण पुर में ।
दर्शन की अभिलाषा रहती, भविजीवों के उर में ।९०९।
गया वंदना करने राजा, ले सारा परिवार ।
धर्मदेशना दी गुरुवर ने, अवसर श्रेष्ठ निहार ।९१०।
ओस बिन्दु सम चंचल जीवन इसका क्या विश्वास ।
कमल तुल्य निर्लिप्त रहो बस, करो यही अभ्यास ।९११।
अणुव्रती की महाव्रति को, जो धारे सुखकार ।
दयाधर्म की महिमा भारी, करता भव से पार ।९१२।
सुन राजा को रंग चढा है, लेऊं संयम भार ।
सुन प्रवचन घर आकर सारा, त्याग रहा ससार ।९१३।
मानसिह को सौंप दिया है अपना सब अधिकार ।
अभयसिह को विजयनगर का, राज्य दिया हितकार ।९१४।
प्रतापसिह ने गुरु चरणो में, संयम व्रत स्वीकारा ।
संयमव्रत से निर्मल बनती, परिणामो की धारा ।९१५।

दर्शन ज्ञान चरित्राराधन, महाशान्ति के स्थान ।
कर पाता है जो भी प्राणी, है वह धन्य महान् ।६१६।

मानसिंह भी दीक्षित :

दोनों भाई अपना–अपना राज्य चलाते सार ।
रक्षण करना प्रजाजनों का, क्षत्रिय धर्म विचार ।६१७।

मानसिंह ने अभयसिंह को, दिया सकल अधिकार ।
जगी तीव्र वैराग्य भावना, त्याग दिया संसार ।६१८।

अभयसिंह अब दो स्थानों का, सुख से करते राज ।
मदनमंजरी रत्नवती के सुख का क्या अन्दाज ।६१९।

दोनों ने दो सुत जन्मे है, रूप कला भण्डार ।
आया समय बने है दोनों पढ–लिख कर हुशियार ।६२०।

अभयसिंहजी भी दीक्षित :

एक समय मुनिराज पधारे, करते धर्म प्रचार ।
सुन उपदेश अभयसिंह सोचे, लूं मैं संयम धार ।६२१।

दोनों को दोनों स्थानों का, राज्यभार संभलाया ।
न्याय-नीति से राज्य चलाना, पाना सुयश सवाया ।६२२।

अभयसिंह ने धार लिया है गुरु से संयम सार ।
है संयम ही सार और है यह संसार असार ।६२३।

मुनि दुनिया का हित करते है, करके उग्र विहार ।
दे उपदेश विशेष धर्म का करते पर उपकार ।६२४।

अतिचारों का वर्जन, सर्जन, संस्कारों का सार ।
अंगों और उपांगों पर नित करते नया विचार ।६२५।

जो भी लेते जो भी देते आगम का आधार ।
बिना प्रान के बिना देह के क्या शोभे संसार ।६२६।

गुरु की आज्ञा ले करके ही, लाते श्रद्धाहार ।
गुरु आज्ञा पर ही होता है, सब कुछ दारमदार ।९२७।
शिक्षा दीक्षा और परीक्षा आज्ञा से दी जाए ।
श्रद्ध क्रियाए भी गुरु आज्ञा लेकर के की जाए ।९२८।
'आणाए धम्मो' कहता है प्रथम अंग आचार ।
जिन शासन मे गुरु की आज्ञा, एक बड़ा आधार ।९२९।
अभयसिंह मुनि ने धारा है अन्त समय संथार ।
आराधक बन उतर गये है भवसागर से पार ।९३०।
कथा भाग सम्पूर्ण हो गया सुनो कथा का सार ।
सार सार लेना है हमको, कहते बारम्बार ।९३१।

कथासार :

चौदह पूर्वो का बतलाया, सार मन्त्र नवकार ।
इसका ध्यान करो आस्था से, सुनो कथा का सार ।९३२।
न्याय-नीति से रहना सीखो, लड़ो न भाई-भाई ।
लड़ कर भाई से जो रोटी खाई तो क्या खाई ।९३३।
नजर बुरी करना न किसी पर, ब्रह्मचर्य व्रत धार ।
मां भगिनी सम माना जाए परनारी संसार ।९३४।
कुम्भकार सम निःस्वार्थी बन, करो दया उपकार ।
आशा रखो नही बदले की, अगर धर्म से प्यार ।९३५।
भ्रातृ-प्रेम का रखा अभय ने, एक बड़ा आदर्श ।
त्याग और साहस से निकला, आखिर क्या निष्कर्ष ।९३६।

प्रशस्ति पत्र :

प्राचीनतम संघ साधु मार्ग है, आगम बल आधार ।
पूर्वाचार्यो की गरिमा से, चमक रहा श्रेयकार ।१।

श्रमण सम्पदा रहे सुरक्षित, रखते इसका ध्यान ।
हुक्म पूज्य ने क्रान्ति कीनी, साधुमार्ग दरम्यान ।२।

शिवलाल उदयसागर जी, चौथमल गुरुराय ।
श्रीलाल और पूज्य जवाहर, गुरू गणेशी पाय ।३

बिगुल बजाया शीत क्रान्ति का गुरू गणेशीलाल ।
पद का मोह नहीं जीवन मे, थे इन्द्रा के लाल ।४

साधु सम्मेलन सादड़ी में जो, संगठन हुआ सुखकार ।
सब सन्तों ने सत्ता सौपकर, किया नेतृत्व स्वीकार ।५।

अनुशासन में देख शिथिलता, पद से लिया मुंह मोड़ ।
गंगाचार्य सम क्राति करके, कार्य किया बेजोड़ ।६।

शिक्षा-दीक्षा आदि सत्ता आचार्य पदाधीन ।
उक्त व्यवस्था देकर चुना, नव नेता प्रवीण ।७।

मेवाड़ मालवा महाराष्ट्र और मारवाड़ ।
उड़ीसा अरु छत्तीसगढ़ भी विचरण थली मझार ।८।

विभिन्न प्रातों मे विचरण कर पहुंचे राणावास ।
सदी बीस के साल सेतीसे, चौमासा था खास ।९।

भ्रातृ-प्रेम का चारित्र सुनाया भव्यों के हितकार ।
गणेश गुरू की कृपा से ही, वर्ते मंगलाचार ।१०।

शिष्यजनों ने गुर्जर प्रान्त में, रचा प्रशस्ति पत्र ।
नाना नाम विख्यात जगत् मे सुयश है सर्वत्र ।११।

